Publication No. 75

ISBN. 81-85057-12-5

ISBN. 81-85057-16-8

Hindustani Sangeet Paddhati

KRAMIK PUSTAK MALIKA

PART-1

Written by

Pt. Vishnu Narayan Bhatkhande

February, 2013

Published by

SANGEET KARYALAYA

HATHRAS-204 101 (India)

Printed by

Hari-om Offset Press

Delhi

अनुक्रमणिका

□

राग, चीज़ और ताल के अनुसार सूची

□

प्रस्तावना

पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी हुई भी हमारी रत्नगर्भा वसुन्धरा अपना स्नेहांचल फैलाए रही। उसी युग में, जब हमारा शास्त्रीय संगीत अंधकारमय पथ पर चलते-चलते लड़खड़ाने लगा था, भारतमाता ने अपनी उज्ज्वल कोख से एक आलोक-दूत 'रत्न-पुरुष' को जन्म दिया। ये रत्न-पुरुष थे—श्री विष्णुनारायण भातखण्डे, बी० ए०, एल–एल० बी०, जिन्होंने आर्य-संस्कृति के प्रमुख स्तम्भ भारतीय संगीत की विशृंखल निधियों को अपने व्यक्तित्व के प्रकाश में समेट लिया। राज्याश्रय-प्राप्त प्राचीन उस्तादों के पास आर्य-संगीत-प्रासाद के जो-कुछ भी भग्नावशेष थे, उन्हें एकत्रित करके नवीन हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति के निर्माण का श्रेय आपको ही प्राप्त हुआ।

यों तो श्री भातखण्डे ने जीवन-पर्यन्त मराठी, अँग्रेज़ी तथा संस्कृत में संगीत के कई ग्रन्थों का निर्माण किया और वे सभी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए, किन्तु मराठी भाषा में लिखित 'हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मालिका' (सीरीज़) विशेष लोकप्रिय सिद्ध हुई।

इस सीरीज़ का प्रथम मराठी-संस्करण, आज से ३३ वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १९२० ई० में प्रकाशित हुआ था। इधर बहुत समय से यह पुस्तक बाज़ार में नहीं मिल रही थी, उसे ध्यान में रखते हुए इसका हिन्दी अनुवाद पाठकों के सम्मुख उपस्थित किया जा रहा है। इस अनुवाद में श्री वामन नत्थोपन्त भट्ट आदि संगीत-विद्वानों से जो सहयोग प्राप्त हुआ है, उसके लिए हम उनका आभार प्रदर्शित करते हैं और आशा करते हैं कि हिन्दी-भाषाभाषी संगीत के विद्यार्थी इससे यथोचित लाभ उठाएँगे।

प्रथम संस्करण
दिसम्बर, १९५३

संगीत कार्यालय, हाथरस (उ०प्र०)

शिक्षकों को सूचना

१. किसी भी स्वर को षड्ज (सा) मानकर विद्यार्थियों से उस स्वर में आवाज़ मिलाने का अभ्यास कराया जाए। शिक्षकों को चाहिए कि वे स्वयं षड्ज स्वर का स्पष्ट, गम्भीर तथा मधुर आवाज़ के साथ उच्चारण करें और प्रतिदिन बार-बार विद्यार्थियों से उच्चारण कराएँ।

२. इस बात का ध्यान रखा जाए कि कोई भी विद्यार्थी शिक्षक के साथ-साथ न गाए। पहले स्वयं शिक्षक गाएँ, तत्पश्चात् विद्यार्थी से उसी प्रकार गवाएँ।

३. कोई भी विद्यार्थी कण्ठ चुराकर अर्थात् दबी हुई आवाज़ से न गाए, इस बात का शिक्षक को ध्यान रखना आवश्यक है।

४. एकसाथ तीन से अधिक विद्यार्थियों को नहीं गवाना चाहिए।

५. स्वर-ज्ञान की शिक्षा देने के लिए आरम्भ से ही श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड) का उपयोग करते हुए, उस पर लिखी हुई स्वर-पंक्तियाँ विद्यार्थियों से बुलवाई जाएँ।

६. विद्यार्थियों द्वारा बोले हुए स्वर-स्थान, श्वास-क्रिया (दम-साँस) तथा उनकी थकावट की ओर बराबर ध्यान रखना चाहिए।

७. सरगमों का पाठ आरम्भ करने से पहले यह देख लेना आवश्यक है कि विद्यार्थियों को स्वर-ज्ञान उत्तम प्रकार से हुआ या नहीं। कारण, सरगम-ज्ञान होने से राग-ज्ञान होने लगता है, अतः स्वर-ज्ञान को सुदृढ़ बनाने की चेष्टा करनी चाहिए।

८. ताल तथा मात्राओं का ज्ञान, स्वर सिखाने से पहले ही करा देना चाहिए, क्योंकि सरगम सीखने से पहले विद्यार्थी को ताल-मात्रा का ज्ञान भली-भाँति होना आवश्यक है।

९. चीज़ों (गीतों) के बोल सिखाने से पहले, उन बोलों के ऊपर लिखी हुई स्वरों की पंक्तियाँ अलंकारों के साथ बोलने का अभ्यास करा देना चाहिए।

१०. शुद्ध स्वरों के पाठों के पढ़ने व बोलने का अभ्यास अच्छी तरह हो जाने के बाद ही विकृत स्वरों के अभ्यास की ओर बढ़ना चाहिए। विकृत स्वरों का स्थान प्रायः शुद्ध स्वरों से अर्धान्तर पर होता है, अतः उनको समझाते समय 'गम' तथा 'निसां', इन स्वरों का प्रमाण उपयोग में लाया करें; उदाहरणार्थ–'मंप' इन स्वरों के बीच-बीच में 'निसां' कहलवाया करें। विकृत स्वर किस समय तथा किस प्रकार से सिखाए जाएँ, यह अध्यापक की सूझ-बूझ तथा योग्यता पर निर्भर है।

इस पुस्तक में दिए हुए चिह्नों का स्पष्टीकरण

रे, ग, ध, नि इन स्वरों के नीचे '–' इस प्रकार आड़ी रेखा लगी हो, तो इन स्वरों को कोमल स्वर मानना चाहिए, अन्यथा शुद्ध स्वर समझना चाहिए।

म इस प्रकार का मध्यम शुद्ध समझना चाहिए।

मं इस प्रकार का तीव्र मध्यम समझना चाहिए।

· यह बिन्दु जिन स्वरों के नीचे हो, वे स्वर मन्द्र सप्तक के हैं तथा जिन स्वरों के ऊपर हो, वे तार सप्तक के हैं। बिना बिन्दु के सब स्वर मध्य-सप्तक के समझने चाहिए।

‿ इस चिह्न में दिए हुए स्वर एक मात्रा-काल में गाए-बजाए जाएँगे।

⁀ यह चिह्न जिस स्वर से जिस स्वर तक हो, वहाँ मींड़ समझनी चाहिए।

– यह चिह्न जिस स्वर के आगे हो, उस स्वर को एक मात्रा बढ़ाकर बोलना चाहिए, अथवा उतना समय विश्राम का समझना चाहिए।

ऽ गीत के बोलों में यह अवग्रह चिह्न जिस अक्षर के आगे आए, उस अक्षर का उच्चार एक मात्र-काल बढ़ाना चाहिए, जैसे– 'दा ऽ = दा आ'।

( ) जो स्वर, इस प्रकार के कोष्ठक में लिखा हो, उसका अगला स्वर, वह स्वर, उसका पहला स्वर और फिर वही स्वर, इस प्रकार चार स्वर एक मात्रा में गाए जाएँगे, जैसे–**(प)** = **धपमप।**

नि
सा कहीं-कहीं स्वरों के ऊपर, छोटे टाइप में स्वर दिए हैं, उन्हें कण-स्वर (ग्रेस-नोट) कहते हैं। ये सूक्ष्म कण नवीन विद्यार्थियों द्वारा गले से न निकल सकें तो भी इनके अभाव में राग-हानि होने का भय नहीं है; किन्तु इनके उपयोग से गायन अधिक रंजक हो जाता है।

× गायन में यह चिह्न ताल की 'सम' दिखाता है। 'सम' को प्रथम ताली मानकर शेष तालियाँ उसी आधार पर माननी चाहिए।

o यह चिह्न ताल की 'खाली' जगह को बताता है।

□

पुस्तक में आई हुई तालों का स्पष्टीकरण

दादरा ताल (६ मात्राएँ)

मात्राएँ –	१	२	३	४	५	६
	×			०		

झप ताल (१० मात्राएँ)

मात्राएँ –	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
	×		२			०		३		

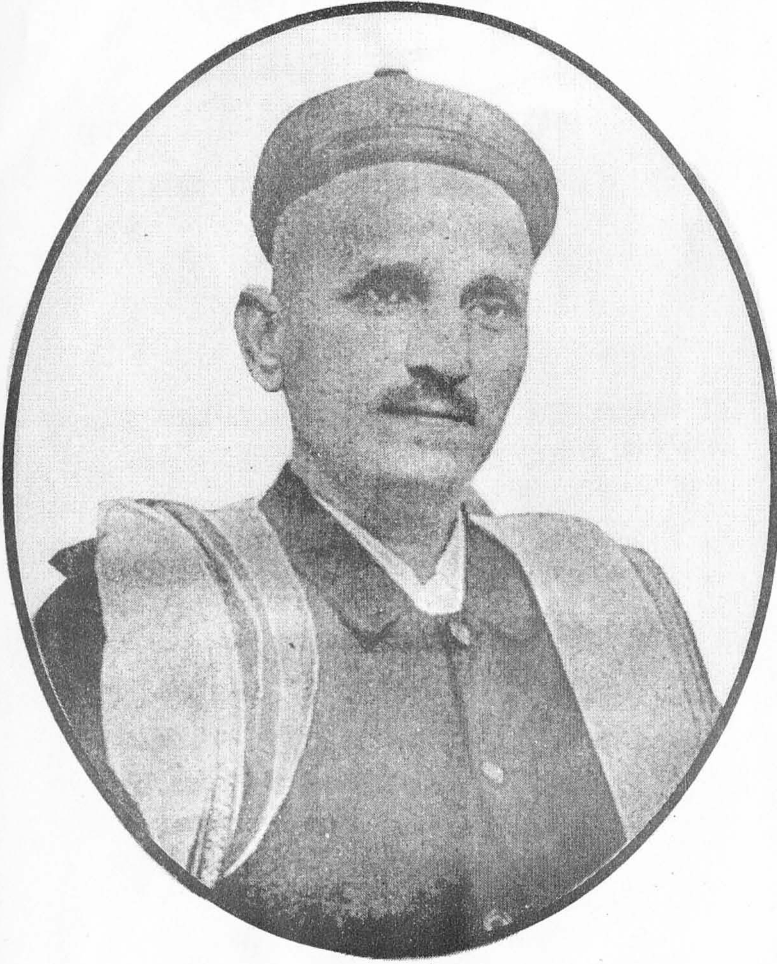
एकताल (१२ मात्राएँ)

मात्राएँ –	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
	×		०		२		०		३		४	

त्रिताल (१६ मात्राएँ)

मात्राएँ–	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	×				२				०				३			

□



ग्रन्थकार : **पं० विष्णुनारायण भातखंडे,** बी.ए., एल्-एल्.बी.

(चतुर पंडित)

जन्म : गोकुलाष्टमी, शाके १७८२	मृत्यु : गणेशचतुर्थी, शाके १८५८
१० अगस्त, १८६०	१६ सितम्बर, १९३६

'मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद !'

सम
की
मा

क्रमिक

पहली पुस्तक

मंगलाचरण

सपार्वतीकं विश्वेशं सलक्ष्मीकं च केशवम् ।
प्रणतोऽस्मि सदा कुर्यात् तदंघ्रियुगलं शिवम् ॥

प्रथम भाग

स्वर-बोध

पाठ १

सूचना : अध्यापकों को चाहिए कि वे अपने शिष्यों को सिखाते समय पृथक्-पृथक् ध्वनियों को षड्ज (सा) मानकर, उसमें विद्यार्थियों की आवाज मिलवाकर गवाएँ। प्रत्येक बार उस ध्वनि को 'सा' मानकर उसका उच्चारण कराएँ।

सा.
सा, रे, सा.
सा, रे, ग, रे, सा.
सा, रे, ग, म, ग, रे, सा.
म.
म, ग, म.
म, ग, रे, ग, म.
म, ग, रे, सा, रे, ग, म.

सा.	म.
सा रे सा.	म ग म.
रे ग रे.	ग रे ग.
ग म ग.	रे सा रे.

पाठ २

सा, रे, ग, म.	म, ग, रे, सा.
सा, रे ग म.	म, ग रे सा.
सा रे, ग म.	म ग, रे सा.
सा रे ग, म.	म ग रे, सा.
सा रे ग म.	म ग रे सा.

सा, रे, ग, म.	म, ग, रे, सा.
×, रे, ग, म.	×, ग, रे, सा.
सा, ×, ग, म.	म, ×, रे, सा.
सा, रे, ×, म.	म, ग, ×, सा.
सा, रे, ग, ×.	म, ग, रे, ×.

पाठ ३

प.

प, ध, प.

प, ध, नि, ध, प.

प, ध, नि, सां, नि, ध, प.

सां.

सां, नि, सां.

सां, नि, ध, नि, सां.

सां, नि, ध, प, ध, नि, सां.

प	सां.
प, ध, प.	सां, नि, सां.
ध, नि, ध.	नि, ध, नि.
नि, सां, नि.	ध, प, ध.

पाठ ४

प, ध, नि, सां.	सां, नि, ध, प.
प, ध नि सां.	सां, नि ध प.
प ध, नि सां.	सां नि, ध प.
प ध नि, सां.	सां नि ध, प.
प ध नि सां.	सां नि ध प.

प, ध, नि, सां.	सां, नि, ध, प.
×, ध, नि, सां.	×, नि, ध, प.
प, ×, नि, सां.	सां, ×, ध, प.
प, ध, ×, सां.	सां, नि, ×, प.
प, ध, नि, ×.	सां नि, ध, ×.

सूचना : उपर्युक्त चारों पाठ विद्यार्थियों द्वारा उलट-पलटकर उत्तम रीति से पढ़वाए जाएँ तथा शिक्षक द्वारा इन पाठों को छोटे-बड़े स्वर-समूहों में नए-नए ढंगों से बनाकर श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों से नित्यप्रति पढ़वाया जाए। इन स्वर-समुदायों के स्वर क्रमशः अर्थात् सिलसिलेवार होने चाहिए, किंतु आगे चलकर भी ये स्वर क्रमानुसार ही रहें, यह आवश्यक नहीं। शुद्ध स्वरों का ज्ञान पक्का हो जाने के पश्चात् फिर एक-एक, दो-दो विकृत स्वर इन्हीं पाठों में शामिल करके अभ्यास कराना चाहिए। स्वर-स्थानों की ओर जितना ध्यान दिया जाएगा, उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी और स्वर-ज्ञान पक्का होगा।

पाठ ५

सूचना : इस पाठ में दिए हुए पलटे अथवा अलंकार विद्यार्थियों से ज़ुबानी याद करवालें, तो विद्यार्थियों के हित में बहुत ही अच्छा होगा। इन अलंकारों को आरोह में कहने का अभ्यास उत्तम रीति से होने के पश्चात् अवरोह में भी इसी प्रकार से अभ्यास कराएँ; उदाहरणार्थ—अलंकार एक व दो देखिए। ये दोनों प्रकार याद होने के बाद उन्हीं स्वरों को भिन्न-भिन्न अकार-इकार आदि में बुलवाया जाए एवं लय के विभिन्न प्रकारों में बार-बार गाकर विद्यार्थियों को बताया जाए। शुद्ध स्वरों की साधना पूर्ण होने के पश्चात् फिर यही क्रम विकृत स्वरों के अभ्यास की ओर बढ़ाना चाहिए।

१. सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।
२. सासा, रेरे, गग, मम, पप, धध, निनि, सांसां।
सांसां, निनि, धध, पप, मम, गग, रेरे, सासा।
३. सासासा, रेरेरे, गगग, ममम, पपप,
धधध, निनिनि, सांसांसां।
४. सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसां,
५. सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप,
धनिध, निसांनि, सांरेंसां।
६. सासा रेरे सासा, रेरे गग रेरे, गग मम गग,
मम पप मम, पप धध पप, धध निनि धध,
निनि सांसां निनि, सांसां रेंरें सांसां।
७. सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां।
८. सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां।
९. साग, रेम, गप, मध, पनि, धसां।
१०. सा सा ग ग, रे रे म म, ग ग प प, म म ध ध,
प प नि नि, ध ध सां सां।

पाठ ६

११. सा म, रे प, ग ध, म नि, प सां।
१२. सासामम, रेरेपप, गगधध, ममनिनि, पपसांसां।
१३. सा प, रे ध, ग नि, म सां।
१४. सा सा प प, रे रे ध ध, ग ग नि नि, म म सां सां।
१५. सां सां नि ध, नि नि ध प, ध ध प म, प प म ग,
म म ग रे, ग ग रे सा।

१६. सा रे ग ग ग, रे ग म म म, ग म प प प, म प ध
ध ध, प ध नि नि नि, ध नि सां सां सां।

१७. सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प,
म प म प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां।

१८. सा रे ग सा रे ग म, रे ग म रे ग म प, ग म प ग म
प ध, म प ध म प ध नि, प ध नि प ध नि सां।

१९. सा रे ग म प ध नि सां नि ध प म ग रे सा.
सा रे ग म प ध नि ध प म ग रे सा.
सा रे ग म प ध प म ग रे सा.
सा रे ग म प म ग रे सा.
सा रे ग म ग रे सा.
सा रे ग रे सा.
सा रे सा.

२०. सा रे सा, सा रे ग रे सा, सा रे ग म ग रे सा, सा रे
ग म प म ग रे सा, सा रे ग म प ध प म ग रे सा,
सा रे ग म प ध नि ध प म ग रे सा, सा रे ग म प
ध नि सां नि ध प म ग रे सा।

पाठ ७

शुद्ध व विकृत स्वरों का अभ्यास करने के लिए उदाहरण

शिक्षकों को सूचना : इस स्वर-माला में प्रत्येक स्वर एक मात्रा-काल का कहलाता है। जहाँ जिस स्वर को जितनी मात्राएँ बढ़ाकर गवाना है, वहाँ उस स्वर के आगे उतने ही 'ऽ' ऐसे अवग्रह चिह्न अंकित किए गए हैं। इस उदाहरण में आए हुए स्वर-विस्तार

बड़ी सावधानी से तथा मधुर आवाज से गवाने चाहिए। पढ़ने की सुविधा के लिए प्रत्येक चार-चार मात्राओं के आगे '।' ऐसी खड़ी रेखा दे दी गई है।

प्रकार १

(अ) शुद्ध स्वर

१. सा ऽ ग ऽ । रे ऽ सा ऽ । सा ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।
ग ऽ म ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । म ऽ प ऽ । म ऽ ग ऽ ।
म ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।

२. सा ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । ग ऽ म ऽ । रे ऽ सा ऽ ।
ग ऽ म ऽ । ध ऽ प ऽ । ध ऽ म ऽ । ग ऽ म ऽ ।
रे ऽ ऽ ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।

३. सा ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । ग ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।
रे ऽ सा ऽ । नि़ ऽ ध़ ऽ । नि़ ऽ ध़ ऽ । प़ ऽ ऽ ऽ ।
प़ ऽ नि़ ऽ । ध ऽ नि़ ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । रे ऽ सा ऽ ।
ग ऽ म ऽ । ध ऽ प ऽ । म ऽ ग ऽ । म ऽ रे ऽ ।
ग ऽ म ऽ । प ऽ म ऽ । ग ऽ म ऽ । रे ऽ सा ऽ ।

४. सा रे सा ऽ । सा रे ग म । रे रे सा ऽ । सा रे ग म ।
प म ग म । रे रे सा ऽ । सा रे ग म । ध प ध म ।
ग ऽ प म । ग म रे सा । सा रे ग म । ध ध नि ध ।
प ध म ग । म ग रे सा । सा रे ग म । प ध नि सां ।
सां नि ध प । म ग रे सा ।

५. सा रे ग म । रे ग म प । प म ध प । नि ध नि सां ।
गं रें सां नि । ध नि ध प । ध म ग प । म ग रे सा ।

६. सा सा ग म । रे ऽ ग प । नि ध ऽ नि । सां ऽ रें सां ।
सां रें गं रें । सां ऽ रें सां । ऽ नि ध प । म ग रे सा ।
७. प प ध नि । सां ऽ रें सां । सां रें गं मं । रें रें सां ऽ ।
सां रें गं मं । पं गं मं रें । सां रें सां ऽ । ध नि सां ऽ ।
गं रें सां नि । ध प सां नि । ध प म ग । म ग रे सा ।

(ब) मे विकृत

१. ग ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । नि़ ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।
नि़ ऽ रे ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ग ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
प ऽ मे ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ग ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
प ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । नि़ ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।
२. सा ऽ रे ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ग ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
प ऽ मे ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । ध ऽ प ऽ । मे ऽ ग ऽ ।
नि ऽ ध ऽ । प ऽ मे ऽ । ध ऽ प ऽ । मे ऽ ग ऽ ।
रे ऽ ग ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । प ऽ रे ऽ । नि़ रे सा ऽ ।
३. सा ऽ नि़ ऽ । ध़ ऽ प़ ऽ । नि़ ऽ ध़ ऽ । प़ ऽ ध़ प़ ।
ध़ ऽ नि़ ऽ । रे ऽ ऽ ऽ । ग ऽ रे ऽ । प ऽ मे ऽ ।
ग ऽ रे ऽ । नि ध प मे । ग ऽ रे ऽ । ग ऽ रे ऽ ।
नि़ रे सा ऽ ।
४. सा रे ग मे । प ग मे प । नि ऽ ध ऽ । प ऽ ध प ।
सां ऽ नि ऽ । ध ऽ प ऽ । मे प नि ध । प ध प म ।
ग ऽ प म । ग ऽ रे ऽ । प ऽ रे ऽ । नि़ रे सा ऽ ।
५. सा रे सा ऽ । सा रे ग रे । सा रे सा ऽ । सा रे ग मे ।
प रे सा ऽ । सा रे ग मे । प ध प मे । ग रे प मे ।
ग रे सा ऽ । सा ऽ ग मे । प ध नि ध । प मे ग प ।
ग रे सा ऽ । सा रे ग मे । प ध नि सां । नि ध प मे ।
ग रे सा ऽ ।

६. ग ग प ध । प सां ऽ सां । नि रें सां ऽ । नि रें गं रें ।
सां रें सां ऽ । नि रें गं मं । पं रें ऽ सां । गं रें सां ऽ ।
रें सां ऽ नि । ध प नि ध । ध मे ग रे । ग मे प मे ।
ग रे प मे । ग रे प ऽ । रे ऽ सा ऽ ।

(स) नि॒, विकृत (अवरोह में)

१. नि़ सा ग म । प ग ऽ म । नि॒ ध म प । ध म ग ऽ ।
ध नि सां ऽ । सां नि॒ ध प । म ग रे सा ।

२. नि़ सा ग ऽ । प प ग म । नि॒ ध ऽ म । प ध ऽ म ।
ग ऽ सां ऽ । नि॒ ध ऽ म । प प म ग । प ऽ ग म ।
ग रे सा ऽ ।

३. नि़ सा ग ऽ । म ग रे सा । प ग ऽ म । ग रे सा ऽ ।
नि॒ ध सां नि॒ । ध म प ध । ऽ म ग ऽ । प ऽ ग ऽ ।
म ग रे सा ।

४. नि़ सा ग म । ग रे सा ऽ । प ग म प । म ग रे सा ।
सां रें सां नि॒ । ध सां नि॒ ध । ग म नि॒ ध । सां ऽ नि॒ ध ।
म प ध म । ग ऽ ऽ ऽ । प ऽ ग म । ग रे सा ऽ ।

५. ग म ध ऽ । म ध नि॒ ध । सां ऽ नि॒ ध । रें सां नि ध ।
गं मं गं रें । सां ऽ नि॒ ध । म ध नि सां । नि॒ ध सां नि॒ ।
ध ऽ म प । ध ऽ म ग । प ऽ ग म । ग रे सा ऽ ।

६. ग म ध नि । सां ऽ नि सां । नि नि सां ऽ । रें सां नि॒ ध ।
गं मं पं गं । मं गं रें सां । नि सां रें सां । नि सां नि॒ ध ।
सां ऽ नि॒ ध । ऽ म ग ऽ । प ऽ ग म । ग रे सा ऽ ।

पाठ ८

शुद्ध व विकृत स्वरों का अभ्यास करने के लिए उदाहरण

प्रकार २

(अ) रे, ध विकृत

१. ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ । म ऽ ग ऽ । रे ऽ ऽ ऽ ।
ग ऽ म ऽ । प ऽ म ऽ । ग ऽ रे ऽ । रे ऽ सा ऽ ।
ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

२. सा ऽ रे ऽ । सा ऽ नि़ सा । ध़ ऽ ऽ नि़ । ध़ ऽ प़ ऽ ।
म़ प़ ध़ ऽ । नि़ ऽ सा ऽ । ग ऽ रे ऽ । ग म प म ।
ग ऽ रे ऽ । रे ऽ सा ऽ । ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

३. सा ऽ रे सा । ग म रे सा । ग म ध प । म ग रे सा ।
नि़ सा ग म । ध ऽ प ऽ । म ग रे प । ग ग रे सा ।
ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

४. ग ऽ म प । रे ग म प । ग म ध प । नि ध ऽ प ।
सां ऽ ध ऽ । नि ध ऽ प । म प म ग । रे ग म प ।
म ग रे सा । ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

५. प प ध ऽ । नि ऽ सां ऽ । ध ऽ नि सां । रें ऽ सां ऽ ।
गं मं पं गं । मं गं रें सां । सां रें सां नि । ध ऽ सां नि ।
ध ऽ म प । म ग रे सा । ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

(ब) रे, म॑, ध विकृत

१. ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ सा ऽ । नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।
म॑ ऽ ग ऽ । प ऽ म॑ ऽ । ग ऽ म॑ ग । रे ग ऽ ऽ ।
म॑ ग रे सा । नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।

२. नि़ नि़ सा रे । ग ऽ रे ग । ऽ म ग ऽ । प म ग ऽ ।
प ध म प । ग म ग ऽ । रे ग ऽ म । ग ऽ रे सा ।
नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।

३. नि़ ऽ रे नि़ । ध़ नि़ ध़ प़ । म़ ध़ नि़ ऽ । ध़ नि़ सा ऽ ।
नि़ रे ग ऽ । म ग रे सा । नि़ रे ग ऽ । म ग ऽ ऽ ।
प ध म प । ग म ग ऽ । रें नि ध नि । ध प ध प ।
म प म ग । म रे ग ऽ । नि़ रे ग ऽ । म ग ध म ।
ग ऽ म ग । रे ग रे सा । नि़ नि़ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।

४. नि़ रे ग रे । ग म प म । ग ऽ म ग । ऽ रे ग ऽ ।
नि ध म ग । म ग रे सा । नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।

५. नि़ रे सा ऽ । नि़ रे ग रे । सा ऽ नि़ रे । ग म ग रे ।
सा ऽ नि़ रे । ग म ध म । ग रे सा ऽ । नि़ रे ग म ।
ध नि ध प । म ग ध म । ग रे सा ऽ । नि़ रे ग म ।
ध नि रें नि । ध प म ग । म ग रे सा । नि़ रे ग म ।
ध नि सां ऽ । सां नि ध प । म ग रे सा ।

६. म ग म ध । म सां ऽ सां । नि रें सां ऽ । गं रें सां ऽ ।
नि रें गं मं । गं रें सां ऽ । गं रें सां रें । नि ध सां नि ।
ध नि ध प । म ग म ग । नि़ नि़ सा रे । ग ऽ म ग ।
ध म ग म । ग रे सा ऽ । नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।

(स) रे, म विकृत

१. ग ऽ रे सा । नि़ रे सा ऽ । नि़ रे ग ऽ । रे ऽ ग ऽ ।
म ग रे ऽ । ग रे ऽ सा । म ध म ग । रे ग रे सा ।

२. नि़ रे॒ ग ऽ । रे॒ ग ऽ ऽ । म॑ ग रे॒ ध । म॑ ग रे॒ सा ।
नि ध म॑ ग । म॑ ग रे॒ सा । सा रे॒ सा ग । रे॒ म॑ ग रे॒ ।
नि नि ध म॑ । ग रे॒ सा ऽ ।

३. नि़ रे॒ नि़ ध़ । म़॑ ध़ सा ऽ । रे॒ ऽ ग रे॒ । म॑ ग रे॒ ध ।
म॑ ग रे॒ म॑ । ग रे॒ सा ऽ । सां रें॒ नि ध । म॑ ग रे॒ सा ।

४. नि़ रे सा ऽ । नि़ रे॒ ग रे॒ । सा ऽ नि़ रे॒ । ग म॑ ग रे॒ ।
सा ऽ नि़ रे॒ । ग म॑ ध म॑ । ग रे॒ सा ऽ । नि़ रे॒ ग म॑ ।
ध नि ध म॑ । ध म॑ ग रे॒ । ग रे॒ सा ऽ । नि़ रे॒ ग म॑ ।
ध नि रें॒ नि । ध म॑ ग रे॒ । ग रे॒ सा ऽ ।

५. म॑ ग म॑ ध । म॑ सां ऽ सां । नि नि रें॒ रें॒ । नि रें॒ नि ध ।
रें॒ नि ध नि । ध म॑ ध म॑ । ग रे॒ ग म॑ । ग रे॒ सा ऽ ।

पाठ ९

शुद्ध व विकृत स्वरों का अभ्यास करने के लिए उदाहरण

प्रकार ३

(अ) ग॒, नि॒ विकृत

१. नि़॒ सा रे रे । ग॒ ग॒ म म । प ऽ ऽ ऽ । म प ध म ।
प ग॒ ऽ रे । रे ग॒ रे म । ग॒ रे नि़॒ सा । नि॒ ध म प ।
ध म ग॒ रे ।

२. नि़॒ सा ग॒ रे । रे म ग॒ रे । रे म प ध । म प ग॒ रे ।
रे म प ध । नि॒ ध सां नि॒ । ध म प ध । म प ग॒ रे ।
रे ग॒ रे म । ग॒ रे नि़॒ सा । नि़॒ सा रे रे । ग॒ ग॒ म म ।
प ऽ ऽ ऽ ।

३. रे ग रे म । ग रे नि़ सा । रे म प ध । म प ग रे ।
सां रें सां नि । ध म सां नि । ध नि ध प । ध म ग रे ।
रे ग रे म । ग रे नि़ सा । रें नि ध प । ध म ग रे ।

४. नि़ सा ध़ नि़ । सा ऽ ग रे । रे ग म ग । रे प ग रे ।
रें नि सां नि । ध म सां नि । ध म प ध । म प ग रे ।
रे प म प । ग ग रे सा । नि़ सा रे रे । ग ग सा रे ।
प ऽ ऽ ऽ ।

५. ध म प ध । नि नि सां ऽ । नि नि सां ऽ । नि सां नि ध ।
रें नि सां रें । नि सां नि ध । सां नि ध म । प ध ग रे ।
रे ग रे म । ग रे नि़ सा । रे म प सां । नि ध ग रे ।
रे प म प । ग ग रे सा । नि़ सा रे रे । ग ग सा रे ।
प ऽ ऽ ऽ ।

(ब) ग, ध, नि विकृत

१. ऽ म प प । ध ऽ ऽ प । नि ध ऽ प । ध म प ध ।
ग ऽ रे सा । रे म प ऽ । नि ध ऽ प ।

२. रे रे सा ऽ । ग रे सा ऽ । रे म प ध । ग ऽ रे सा ।
रे म प ऽ । नि ध ऽ प । सां नि ध प । ध म प ध ।
ग ऽ रे सा । रे म प प । नि ध ऽ प ।

३. रे सा नि़ ध । प़ नि़ ध़ प़ । म़ प़ ध़ ध़ । सा ऽ रे सा ।
रे म प ध । ग ऽ रे सा । रे म प प । नि ध ऽ प ।

४. सा ग रे सा । म ग रे सा । रे म प ध । ग ग रे सा ।
रे म प प । नि ध ऽ प । सां नि धप । रें सां नि ध ।
नि ध प प । म पसां ऽ । नि ध प प । ध म प ध ।
ग ग रे सा । रे म प प । नि ध ऽ प ।

५. म प ध ध । सां ऽ ऽ सां । ध ध सां सां । रें सां ध प ।
प गं रें सां । रें सां ध प । सां ऽ ध प । रें सां ध प ।
म प नि ध । प ग रे सा । रे म प प । नि ध ऽ प ।

(स) रे, ग, ध, नि विकृत

१. सा रे ग म । ग रे सा ऽ । ध़ नि़ सा ऽ । रे नि़ सा ऽ ।
प ध म प । ग ऽ रे सा ।

२. सा ऽ रे म । ग रे सा ऽ । ध़ नि़ ध़ प़ । ध़ नि़ सा ऽ ।
सा ध प ध । म प ग नि । ध प ग म । ग रे सा ऽ ।

३. नि़ सा ग म । ध ऽ प ऽ । ध प ध नि । ध प ग ऽ ।
ग नि ध नि । ध प ग म । सां नि ध प । म ग रे सा ।

४. सा रे सा ऽ । सा रे ग रे । सा ऽ सा रे । ग म ग रे ।
सा ऽ सा रे । ग म प म । ग रे सा ऽ । सा रे ग म ।
प ध प म । ग रे सा ऽ । सा रे ग म । प ध नि ध ।
प म ग म । ग रे सा ऽ । सा रे ग म । प ध नि सां ।
नि ध प म । ग रे सा ऽ ।

५. ध म ध नि । सां ऽ रें सां । नि नि सां ऽ । रें सां ध प ।
सां ध प नि । म प ग म । नि ध प म । ग रे सा ऽ ।

(ख) रे, ग, म॑, ध विकृत

१. नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ग ऽ । रे ऽ सा ऽ ।
नि़ ऽ सा ऽ । रे नि़ ध ऽ । म॑ ऽ ध़ ऽ । नि़ ऽ सा ऽ ।
रे ऽ ग ऽ । रे ऽ सा ऽ ।

२. नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ । म॑ ऽ ग ऽ । ग म॑ ग ऽ ।
म॑ ध नि ध । म॑ ग ध म॑ । ग ऽ रे ग । ऽ रे सा ऽ ।

३. नि़ ऽ सा ऽ । रे नि़ ध़ प़ । म़ प़ ध़ नि़ । सा ऽ रे सा ।
रे ग ऽ ऽ । ध म॑ ग ऽ । नि ध म॑ ग । रे ग रे सा ।

४. ध़ नि़ सा रे । ग ऽ रे ग । म॑ ग ध म॑ । ग ऽ रे ग ।
ध प नि ध । प ध म॑ प । म॑ ग ध म॑ । ग ऽ रे सा ।

५. नि़ सा रे सा । रे ग रे सा । म॑ ग ध म॑ । ग ऽ रे सा ।
नि रें नि ध । नि ध प ध । प म॑ ग ऽ । रे ग रे सा ।

६. म॑ ग म॑ ध । नि ऽ सां ऽ । रें रें गं गं । रें रें सां ऽ ।
गं रें सां रें । नि ध सां नि । ध नि ध प । म॑ ग रे सा ।
नि़ नि़ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।

पाठ १०

स्वरकाल-साधन

शिक्षकों को सूचना : इस पाठ में १ अंक को एक मात्रा में कायम **करके** मात्रा-काल का नियम बनाना चाहिए। फिर इसी नियम के अनुसार आगे दिए हुए स्वर-प्रकार विद्यार्थियों से गवाए जाएँ। १ अंक के अंतर्गत जितने स्वर लिखे हैं, वे सभी स्वर एक मात्रा-काल में गवाए जाएँ। एक मात्रा-काल में जितने भी स्वर या अवग्रह लिखे हैं, उनके नीचे ‿ ऐसा अथवा ⌴ ऐसा कोष्ठक-चिह्न दिया गया है। जहाँ एक मात्रा-काल में अधिक स्वर लिखे हैं, वहाँ लय को घटाकर (विलंबित करके) गाने में विद्यार्थियों को सुविधा रहेगी।

१	१	१	१	१	१	१	१	
१. सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां	। इसी प्रकार अवरोह करो।

१ १ १ १
२. सारे गम पध निसां। इसी प्रकार अवरोह करो।

१ १
३. सारेगम पधनिसां। "

१
४. सारेगमपधनिसां। "

१ १ १ १ १ १ १ १
५. सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां। "

१ १ १ १ १ १ १ १
६. सासासा रेरेरे गगग ममम पपप धधध निनिनि सांसांसां। "

१ १ १ १ १ १
७. सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां। "

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
८. साऽऽरे गऽऽऽ रेऽऽग मऽऽऽ गऽऽम पऽऽऽ मऽऽप धऽऽऽ पऽऽध निऽऽऽ

१ १
धऽऽनि सांऽऽऽ।

१ १ १ १ १ १ १ १ १
९. साऽगरे गऽऽऽ रेऽमग मऽऽऽ गऽपम पऽऽऽ मऽधप धऽऽऽ पऽनिध

१ १ १
निऽऽऽ धऽसांनि सांऽऽऽ।

१ १ १ १ १ १ १ १
१०. ऽऽसाऽ ऽऽरेऽ ऽऽगऽ ऽऽमऽ ऽऽपऽ ऽऽधऽ ऽऽनिऽ ऽऽसांऽ। "

इसी प्रकार मात्राओं को भिन्न-भिन्न प्रकार से तैयार करके शिक्षकों द्वारा उनमें योग्य स्वर लिखकर कक्षा में ही विद्यार्थियों से पढ़वाया या गवाया जाए। इसके उपरांत आगे दिए हुए अलंकारिक प्रकारों को भी विद्यार्थियों से पढ़वाने का क्रम चालू करें तथा स्वयं गाकर उन्हें बताएँ। इन प्रकारों में भी एक मात्रा-काल अवग्रह-चिह्न द्वारा दिखाया गया है।

नि सा | ग ग ग | मं प सां | प ग

सा – रे सा | मग प रे सा | प सां ध प | ग (प) रे सा

ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

प | | प

सां ध प ग | रेग सारेग ,–प ग | ग,पध सां सांसांधप गरेसा–

ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽऽ ,ऽऽ ऽ | ऽ,ऽऽ ऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ |

म | म रे म | नि़ सा

रे म प मप | नि़नि़पमप रे प रे | सा (सा) नि़ प

ऽ ऽ ऽ ऽऽ | ऽऽऽऽऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

नि़ | | ग

ध़ – प –,मप | ध़ध़पम प म ग़ | म (म) रे़ सा

ऽ ऽ ऽ ऽ,ऽऽ | ऽऽऽऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ |

मं प मं | रे़ सा ग़ | ग़ ग़ मं

–,प ग़ ग़मंप ग़,रे़रे़ सा | नि़सा मंग़ प | ध़ध़पमंप मंग़ प ग़ रे़ सा

ऽ,ऽ ऽ ऽऽऽ ऽ,ऽऽ ऽ | ऽ ऽ ऽऽ ऽ | ऽऽऽऽऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

सा | नि नि़नि़ | ध़ | ध ध मं

मं | ग (सा) ध़नि़ रे़रे़ नि़ | मं़ ध़ रे़ सा | मंध सांसांनिधनि मं धग

ऽ | ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽऽऽऽ ऽ ऽऽ

नि़

मंमंगरे़ सानि़सा– ध़, नि़रे़

ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽ, ऽऽ

ज्ञातव्य : उपर्युक्त प्रकारों को गाते समय सुविधा के लिए अकार 'ऽ' के स्थान पर आ, ता, ना, न आदि अक्षरों का प्रयोग कर सकते हैं।

द्वितीय भाग

राग-बोध

ठाठ कल्याण

स्वर

सा रे ग म॑ प ध नि सां.

राग यमन–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

> वादी स्वर : ग, संवादी : नि
> विकृत स्वर : म तीव्र
> गायन-समय : रात्रि का प्रथम प्रहर
> आरोह : सारेग, म॑प, ध, निसां
> अवरोह : सांनिध, प म॑ग, रेसा

स्थायी

नि	ध	ऽ	प	म॑	प	ग	म॑	प	ऽ	ऽ	ऽ	प	म॑	ग	रे
०				३				×				२			
सा	रे	ग	रे	ग	म॑	प	ध	प	म॑	ग	रे	ग	रे	सा	ऽ
०				३				×				२			
नि़	रे	ग	म॑	प	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प	म॑	ग	म॑।
०				३				×				२			

अंतरा

ग ग प ध	प सां ऽ सां	नि रें गं रें	सां नि ध प
०	३	×	२
गं रें सां नि	ध प नि ध	प मं ग रे	ग रे सा ऽ
०	३	×	२
नि़ रे ग मं	प ध नि सां	रें सां नि ध	प मं ग मं
०	३	×	२

राग यभन–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

[सां]नि ध – प	मं प ग मं	प – – –	[मं]प मं ग रे
स दा ऽ शि	व भ ज म	ना ऽ ऽ ऽ	नि स दि न
०	३	×	२
सा रे ग रे	ग मं प ध	[मं]प मं ग रे	ग रे सा सा
रि धि सि धि	दा ऽ य क	बि न त स	हा ऽ य क
०	३	×	२
[सा]नि़ रे ग मं	प ध नि सां	[सां]रें सां नि ध	प मं ग मं
ना ऽ ह क	भ ट क त	फि र त अ	न व र त
०	३	×	२

अंतरा

ग		नि	
प ग. प धप	सां – सां –	सां रें गं रें	सां नि ध प
शं ऽ क र	भो ऽ ला ऽ	पा ऽ र व	ती र म ण
०	३	×	२
सां			
गं रें सां नि	ध प नि ध	प मं ग रे	ग रे सा सा
सि त त न	पं ऽ न ग	भू ऽ ष न	अ नु प म
०	३	×	२
नि		सां	
सा रे ग मं	प ध नि सां	रें सां नि ध	प मं ग मं
का ऽ हे न	सु मि र त	भ ट क त	तू फि र त।
०	३	×	२

राग यमन—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

मं	मं प	ग	
प प नि ध	प ध प –	मं रे मं मं	प – – –
गु रु बि न	कै ऽ से ऽ	गु न गा ऽ	वे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
मं प मं			नि
प नि ध प	– मं ग रे	ग रे गमंप रे	सा रे सा –
गु रु न मा	ऽ ने तो ऽ	गु न नऽऽ हिं	आ ऽ वे ऽ
०	३	×	२
नि	मं ग		नि
सा सा रे रे	ग मं मं –	प प – नि	मं ध प –
गु नि य न	में ऽ बे ऽ	गु नी ऽ क	हा ऽ वे ऽ
०	३	×	२

अंतरा

मं		प ध	
प – प मं	ग – रे –	ग प सां ध	सां सां सां –
मा ऽ ने ऽ	तो ऽ री ऽ	झा ऽ वे ऽ	स ब को ऽ
०	३	×	२
नि	नि सां		ध ध
सां सां गं रे	सां रें सां –	नि ध सां सां	नि नि मं प
च र न ग	हे ऽ सा ऽ	दी ऽ क न	के ऽ ज ब
०	३	×	२
मं ग	रे		
प ग प (१)	ग रे सा सा	सारे गमं पध निसां	निध पमं गरे सासा
आ ऽ वे ऽ	अ च प ल	ताऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽल सुर
०	३	×	२

ठाठ बिलावल

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां

राग बिलावल–एकताल (१२ मात्राएँ)

वादी स्वर : ध, संवादी : ग
स्वर : सब शुद्ध
गायन-समय : प्रातःकाल का प्रथम प्रहर
आरोह : सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां
अवरोह : सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा

स्थायी

सां	नि	ध	नि	सां	ऽ	सां	रें	सां	नि	ध	प
×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़	सा	ग	रे	सा	नि़	ध़	ध़	सा	ऽ	रे	सा
×		०		२		०		३		४	
ग	म	ग	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प	प	ध	नि	सां	ऽ	सां	रें	मं	रें	सां	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	रें	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	ऽ	रें	सां
×		०		२		०		३		४	
सां	रें	सां	नि	ध	प	ध	नि	सां	नि	ध	प
×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

राग बिलावल–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प			ध					नि							
ग	प	नि	नि	सां	–	सां	सां	सां	रें	सां	नि	ध	प	मग	मरे
तू	ऽ	हि	आ	धा	ऽ	र	स	क	ल	त्रि	भु	व	न	कोऽ	ऽऽ
३				×				२				०			
म								नि							
ग	म	प	मग	म	रे	सा	–	ध	नि	सां	नि	ध	प	मग	मरे
पा	ऽ	ल	कऽ	स	च	रा	ऽ	च	र	भू	ऽ	त	न	कोऽ	ऽऽ
३				×				२				०			

अंतरा

		प	ध					नि		रें					
प	–	नि	नि	सां	–	सां	–	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	सां
तू	ऽ	ही	ऽ	वि	ऽ	ष्णू	ऽ	तू	ऽ	ना	ऽ	रा	ऽ	य	न
३				×				२				०			
नि						नि		नि							
सां	–	गं	रें	सां	–	ध	प	ध	नि	सां	सांनि	ध	प	मग	मरे
का	ऽ	र	न	तू	ऽ	प	र	ब्र	ऽ	ह्म	जऽ	ग	त	कोऽ	ऽऽ
३				×				२				०			

राग बिलावल–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प		प	ध					नि							
ग	प	नि	नि	सां	–	सां	सां	सां	निसांरें	सां	नि	ध	प	मग	मरे
तें	ऽ	ह	रि	ना	ऽ	म	न	सु	मिऽऽ	र	न	की	ऽ	नोऽ	ऽऽ।
३				×				२				०			

म		नि	
ग म प मग	म रे सां –	सांसां गरें सांनि धनि	सांनि धप मग मरे
ए ऽ क हुँऽ	द्दि ऽ न ऽ	रैऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ नऽ।
३	×	२	० ×

अंतरा

प		नि	नि सां
प प सां सां	सां रें सां सां	सां रें गं रें	सां (सां) ध निप
सु मि र न	भ ज न क	रो ऽ के ऽ	श व को ऽऽ
३	×	२	०
प प		नि	
ग म प ग	म रे सा सा	सांसां गरें सांनि धनि	सांनि धप मग मरे
अ भ य दा	ऽ न ता हे	दीऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ नऽ
३	×	२	०
प नि			
ग प – धनि			
तें ऽ ऽ हरि			
३			

खमाज ठाठ

स्वर

सा रे ग म प ध नि॒ सां.

राग खमाज–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : ग, संवादी : नि
स्वर : नि कोमल, आरोह में रे वर्जित
गायन-समय : रात्रि का दूसरा प्रहर
आरोह : सा, गम, प, ध नि सां
अवरोह : सांनि॒ धप, मग, रेसा

ग	ग	सा	ग	म	प	ग	म	नि॒	ध	ऽ	म	प	ध	ऽ	म
×				२				०				३			
ग	ऽ	ऽ	ऽ	ध	नि	सां	ऽ	सां	नि॒	ध	प	म	ग	रे	सा
×				२				०				३			

अंतरा

ग	म	ध	नि	सां	ऽ	नि	सां	सां	गं	मं	गं	नि	नि	सां	ऽ
×				२				०				३			
सां	रें	सां	नि॒	ध	नि॒	ध	प	ध	म	प	ग	म	ग	रे	सा
×				२				०				३			
नि़	सा	ग	म	प	ग	ऽ	म	नि॒	ध	ऽ	म	प	ध	ऽ	म
×				२				०				३			
ग	ऽ	ऽ	ऽ	ध	नि	सां	ऽ	सां	नि॒	ध	प	म	ग	रे	सा।
×				२				०				३			

राग खमाज–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

															सां
															प
सां				ध			रे								
नि॒	नि॒	धप	म	प	म	ग	ग	म	–	प	म	प	–	–	–
न	ध	टऽ	धु	र	लि	ऽ	या	ब्रा	ऽ	जे	स	खी	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

नि सां			ग
सां नि सां रें	सां नि़ ध प	म ग म गरे	सा रे नि़ सा
सि मि ट जु	व ति ज न	ठा ऽ ड़े निऽ	चे ऽ त न
०	३	×	२
सा			ध
नि़ सा ग म	प प नि नि	सां नि सां रें	सां नि़ ध, सां
पु ल कि त	स ब त न	मु कु लि त	न य न, प
०	३	×	२

अंतरा

म नि़		सां	सां
ग म ध नि	सां – निं सां	नि – सां सां	नि सां नि़ ध
रा ऽ ग ख	मा ऽ ज मु	ना ऽ य मु	ल ऽ च्छ न
०	३	×	२
सां नि सां रें	सां नि़ ध प	सां नि़ ध प	म ग रे सा
०	३	×	२
सा		नि	ध
नि़ सा ग म	प प नि नि	सां नि सां रें	सां नि़ ध, सां
पु ल कि त	स ब त न	मु कु लि त	न य न, प।
०	३	×	२

राग खमाज–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प		म	नि
सां (सां) – नि॒नि॒	धप ध (म) ग	ग म प ध	सां नि सां –
ला ऽ ऽ गर	ह्योऽ ऽ म न	रा ऽ धा ऽ	व र से ऽ
०	३	×	२
नि मं	रें रें	सां	ध प
– सां – गंमं	गं – नि सां	– नि सां सां	निसांरें निसां नि॒ ध
ऽ औ ऽ रक	हे ऽ क छु	ऽ औ र उ	पऽऽ रऽ से ऽ
०	३	×	२
ध			
सां – – नि॒नि॒			
ला ऽ ऽ गर			
०			

अंतरा १.

म नि॒	सां	नि	रें
ग म ध नि	सां – ध नि	सां – – सां	सांनि सां नि॒ ध
दि न र ति	याँ ऽ अँ खि	याँ ऽ ऽ आ	गेऽ ऽ मे री
०	३	×	२
नि	रें रें	सां	नि प
सां – गं मं	गं – नि सां	– नि सां सां	सां (सां) नि॒ ध
ठा ऽ ड़े र	हे ऽ क छु	ऽ रू प सु	घ र से ऽ,
०	३	×	२
ध			
सां – – नि॒नि॒			
ला ऽ ऽ गर			
०			

अंतरा २.

म त्रि		सां	नि
ग म ध नि	सां नि सां सां	नि – सां –	सां (सां) नि ध
आ ऽ नं द	घ न प्र भु	ला ऽ ए ऽ	ने ऽ हा ऽ
०	३	×	२
ध मं	रें रें	सां	ध प
प – गं गं	गं – नि सां	नि नि सां सां	निसांरें निसां नि ध
प्रे ऽ म रँ	गूँ ऽ गी मैं	गि रि ध र	वऽऽ रऽ से ऽ
०	३	×	२
ध			
सां – – निनि			
ला ऽ ऽ गर			
०			

ठाठ भैरव

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां

राग भैरव–झप ताल (१० मात्राएँ)

वादी स्वर : ध, संवादी : रे
विकृत स्वर : रे, ध कोमल
गायन-समय : प्रातःकाल
आरोह : सा, रे, ग म, पध, नि, सां
अवरोह : सां, नि, ध, पमंग, रे, सा

स्थायी

सा	ध	प	प	ध	म	प	म	ग	रे
×		२			०		३		
ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे	रे	सा
×		२			०		३		
नि़	सा	रे	रे	सा	ध़	ध़	नि़	सा	ऽ
×		२			०		३		
ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे	रे	सा
×		२			०		३		

अंतरा

प	प	ध	ध	नि	सां	ऽ	ध	नि	सां
×		२			०		३		
ध	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	ध	प
×		२			०		३		
म	ग	म	प	ध	रें	सां	ध	ध	प
×		२			०		३		
सां	नि	ध़	ध	प	म	ग	रे	रे	सा
×		२			०		३		
सा	ध	प	प	ध	म	प	म	ग	रे
×		२			०		३		

राग भैरव–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

														म	
														प	म
														गु	रु
म								सा				म			
रे	—	—	सा	—	रे	नि	सा	म	—	—	—	रे	रे	म	म
ना	ऽ	ऽ	था	ऽ	स	ब	न	के	ऽ	ऽ	ऽ	नि	त	सु	म
०				३				×				२			
				ध								ग		रे	
प	—	प	ध	सां	—	सां	सांनि	ध	नि	ध	प	म	रे,	प	म
रे	ऽ	म	न	जी	ऽ	वि	तऽ	छि	न	भं	ऽ	गु	र,	गु	रु ।
०				३				×				२			

अंतरा

ग				नि								सां			
म	—	प	—	ध	—	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
जो	ऽ	चा	ऽ	हे	ऽ	तू	च	तु	र	सु	ख	सं	ऽ	प	द
०				३				×				२			
नि		नि										सां		नि	
ध	—	ध	ध	नि	—	सां	सां	रें	रें	सां	सां	नि	सां	ध	प
मं	ऽ	ग	ल	ना	ऽ	म	क	म	ल	सु	ख	सं	ऽ	व	द
०				३				×				२			
म				ध				नि						रे	
ग	म	प	ध	सां	—	सां	सांनि	ध	नि	ध	प	म	रे,	प	मग
जा	ऽ	कि	कृ	पा	ऽ	स	बऽ	पु	र	त	का	ऽ	म,	गु	रुऽ ।
०				३				×				२			

राग भैरव–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

म		नि				प									
ग	म	ध॒	–	प	–	ध॒	म	ध॒ध॒	पम	प	–	म	–	ग	–
जा	ऽ	गो	ऽ	मो	ऽ	ह	न	प्याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
प			म	ग				ग				म			
ग	–	म	ग	रे॒	–	ग	प	म	ग	म	ग	रे॒	–	सा	–
साँ	ऽ	व	री	सू	ऽ	र	त	मो	रे	म	न	भा	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
सा		म						सां	सां						
नि़	सा	ग	म	प	ध॒	नि	सां	रें॒	रें॒	सां	नि	ध॒	प	म	ग
सुं	ऽ	द	र	ला	ऽ	ल	ह	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

				नि											
प	–	प	प	ध॒	–	नि	नि	सां	–	सां	–	नि	सां	सां	सां
प्रा	ऽ	त	स	मैं	ऽ	उ	ठि	भा	ऽ	नू	ऽ	द	य	भ	यो
०				३				×				२			
नि			सां					सां				सां		नि	
ध॒	–	ध॒	नि	सां	सां	सां	सां	रें॒	–	सां	सां	नि	सां	ध॒	प
ग्वा	ऽ	ल	बा	ऽ	ल	स	ब	भू	ऽ	प	त	ठा	ऽ	ड़े	ऽ
०				३				×				२			
प				ध॒		नि						म			
ग	म	प	ध॒	सां	–	ध॒	प	म	ग	(म)	ग	रे॒	–	सा	–
द	र	स	न	के	ऽ	स	ब	भू	ऽ	खे	ऽ	प्या	ऽ	से	ऽ
०				३				×				२			

सा म		सां सां	
नि़ सा ग म	प ध नि सां	रें रें सां नि	ध प म ग
उ ठि यो ऽ	नं ऽ द कि	शोऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ।
०	३	×	२

ठाठ पूर्वी

स्वर

सा रे ग मं प ध नि सां.

राग पूर्वी—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

> वादी स्वर : ग, संवादी : नि
> विकृत स्वर : रे ध कोमल, मध्यम दोनों प्रकार के
> गायन-समय : दिन का अंतिम प्रहर
> आरोह : सा, रे, ग, मंप, ध, निसां
> अवरोह : सां, नि ध, प, मं ग, रे, सा

स्थायी

सा ध मं प	ग म ग रे	म ग ऽ रे	ग मं प ऽ
०	३	×	२
प ध मं प	ग म ग ऽ	रे ग ऽ मं	ग रे सा ऽ
०	३	×	२
नि़ नि़ सा रे	ग ऽ म ग	मं ध रें नि	ध नि ध प
०	३	×	२
प ध मं प	ग म ग रे	म ग ऽ रे	ग मं प ऽ।
०	३	×	२

अंतरा

म॑	ग	म॑	ध॒	म॑	सां	ऽ	सां	नि	रें॒	गं	रें॒	सां	निं	ध॒	प
०				३				×				२			
रें॒	नि	ध॒	नि	ध॒	प	ध॒	प	म॑	ग	ऽ	म॑	ग	रे॒	सा	ऽ
०				३				×				२			
नि़	नि़	सा	रे॒	ग	ऽ	म	ग	म॑	ध॒	रें॒	नि	ध॒	नि	ध॒	प
०				३				×				२			
प	ध॒	म॑	प	ग	म॑	ग	रे॒	म	ग	ऽ	रे॒	ग	म॑	प	ऽ
०				३				×				२			

राग पूर्वी—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

सा	म॑				म॑			म॑							
नि़	रे॒	ग	प़	—	प	—	प	प	ध॒	म॑	(पम॑)	ग	म	ग	—
ए	ऽ	री	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	का	स	ब	सु	(खऽ)	दी	ऽ	नो	ऽ
०				३				×				२			
			ध॒			ध॒									
म॑	रे॒	ग	म॑	—	ध॒	म॑	ग	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	रे॒	सा	—
दू	ऽ	ध	पू	ऽ	त	औ	र	अ	न	ध	न	ल	छ	मी	ऽ
०				३				×				२			
सा						म॑		म॑		ध॒		म॑			
नि़	नि़	सा	रे॒	ग	—	प	—	प	ध॒	म॑	(पम॑)	ग	म	ग	—
पि	या	पा	ऽ	यो	ऽ	गो	ऽ	बिं	द	रं	(गऽ)	भी	ऽ	नो	ऽ।
०				३				×				२			

अन्तरा.

ग				ध								नि			
म॑	म॑	ग	ग	म॑	–	ध	मंध	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां	सां
अ	ध	म	उ	श्रा	ऽ	र	नऽ	ज	स	बि	ऽ	स्ता	ऽ	र	न
०				३				×				२			
नि								सां	सां						
सां	सां	–	सां	नि	ध	नि	ध	नि	निरें	नि	ध	नि	ध	प	प
कृ	पा	ऽ	क	र	न	दु	ख	ह	रऽ	न	सु	ख	क	र	न
०				३				×				२			
सा				ग								म॑			
नि़	रे	ग	रेग	प	–	प	प	म॑प	ध	म॑	पम॑	ग	म॑	ग	–
आ	ऽ	जि	जऽ	के	ऽ	स	ब	लाऽ	ऽ	य	कऽ	की	ऽ	नो	ऽ।
०				३				×				२			

राग पूर्वी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

			ध			म॑									
प	–	ध	म॑	–	पम॑	ग	म	ग	–	–	म॑	ग	रे	सा	–
ना	ऽ	थ	ना	ऽ	थऽ	क	र	बो	ऽ	ऽ	ल	र	स	ना	ऽ
०				३				×				२			
ध			ध			म॑									
म॑	ध	नि	म॑	ध	म॑	ग	म	ग	–	–	म॑	ग	रे	सा	–
ना	ऽ	थ	ना	ऽ	थ	क	र	बो	ऽ	ऽ	ल	र	स	ना	ऽ
०				३				×				२			
सां			सां			ध									
नि	–	ध	नि	रें	नि	म॑	म॑	ग	–	–	म॑	ग	रे	सा	–
ना	ऽ	थ	ना	ऽ	थ	क	र	बो	ऽ	ऽ	ल	र	स	ना	ऽ
०				३				×				२			
नि						म॑									
सा	ध	ध	म॑	–	पम॑	ग	म	ग	–	–	म॑	ग	रे	सा	–
ना	ऽ	थ	ना	ऽ	ऽथ	क	र	बो	ऽ	ऽ	ल	र	स	ना	ऽ।
०				३				×				२			

अंतरा

ध॒				ध॒				ध॒				नि			
म॑	–	ग	ग	म॑	म॑	ध॒	म॑ध॒	सां	–	सां	सां	सां	रें॒	सां	–
का	ऽ	हे	तु	म	न	ब	कऽ	वा	ऽ	द	क	र	त	है	ऽ
०				३				×				२			
सां			रें॒			ध॒									
नि	रें॒	गं	नि	रें॒	नि	म॑	म॑	ग	–	–	म॑	ग	रे॒	सा	–
कृ	ऽ	ष्ण	कृ	ऽ	ष्ण	क	हि	बो	ऽ	ऽ	ल	र	स	ना	ऽ
०				३				×				२			
ध॒		सां				ध॒									
म॑	–	ध॒	नि	रें॒	नि	म॑	म॑	ग	–	–	म॑	ग	रे॒	सा	–
ना	ऽ	थ	ना	ऽ	थ	क	र	बो	ऽ	ऽ	ल	र	स	ना	ऽ
०				३				×				२			

ठाठ मारवा

स्वर

सा रे॒ ग म॑ प ध नि सां

राग मारवा–एकताल (१२ मात्राएँ)

बादी स्वर : रे, संवादी : ध
विकृत स्वर : रे कोमल, म तीव्र, प वर्जित
गायन-समय : दिन का अंतिम प्रहर
आरोह : सा, रे॒, ग, म॑ध, निध, सां
अवरोह : सां, निध, म॑ग, रे॒ सा

स्थायी

ध	म॑	ध	म॑	ग	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़	रे॒	नि़	ध़	म़॑	ध़	सा	ऽ	रे॒	रे॒	सा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़	रे॒	ग	ग	म॑	ध	म॑	ध	सां	ऽ	रें॒	सां
×		०		२		०		३		४	
नि	रें॒	नि	ध	म॑	ध	नि	ध	म॑	ग	रे॒	सा।
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

ग	ग	म॑	ध	म॑	ध	सां	ऽ	नि	रें॒	सां	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	नि	रें॒	रें॒	नि	रें॒	नि	ध	म॑	ध	म॑	ग
×		०		२		०		३		४	
रे॒	रे॒	ग	ग	म॑	म॑	नि	ध	म॑	ग	रे॒	सा
×		०		२		०		३		४	
नि	रें॒	नि	ध	म॑	ध	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा।
×		०		२		०		३		४	

राग मारवा—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

सा								सा							
ध	ध	म॑	ध	म॑	ग	रे॒	रे॒	रे॒	गरे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
त	त	वि	त	त	घ	न	सु	षि	रऽ	स	ब	मा	ऽ	न	त
०				३				×				२			
ध़											रे॒				
म़॑	–	ध़	सा	सा	सा	रे॒	सा	सारे॒	ग	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
बा	ऽ	जे	च	तु	र	वि	ध	शाऽ	ऽ	स्त्र	ब	खा	ऽ	न	त।
०				३				×				२			

अंतरा

				ध											
ग	–	म॑	ध	म॑	सां	सां	सां	–	रें॒	नि	रें॒	नि	रें॒	नि	ध
बी	ऽ	न	मृ	दं	ऽ	ग	झाँ	ऽ	झ	सु	र	ली	ऽ	ग	त
०				३				×				२			
ध				ध						रे॒					
म॑	ध	नि	ध	म॑	ध	म॑	ग	रे॒	गरे॒	म॑	ग	ग	रे॒	सा	सा
भे	ऽ	द	अ	नं	ऽ	त	च	तु	रऽ	गु	नि	जा	ऽ	न	त।
०				३				×				२			

राग मारवा—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

म॑								सा				ध			
ध	म॑	–	ग	–	रे॒	–	सा	नि़	रे॒	ग	–	म॑	म॑	ध	–
ल	ई	ऽ	रे	ऽ	श्या	ऽ	म	ह	म	री	ऽ	डु	रि	या	ऽ
०				३				×				२			

(ध)म ध म ग	– रे – सा	(सा)नि़ रे़ ग –	(ध)म म ध –
ल ऽ ई रे	ऽ श्या ऽ म	ह म री ऽ	डु रि या ऽ
०	३	×	२
(सां)नि रें नि म	– ध म –	ग रे ग म	ग रे सा –
कै ऽ से मैं	ऽ भ रूँ ऽ	ज ल की ग	ग रि या ऽ।
०	३	×	२

अंतरा

ग – ग (ध)म	– म ध –	(ध)म – सां सां	सां – सां सां
बा ऽ ट घा	ऽ ट में ऽ	रो ऽ क त	टो ऽ क त
०	३	×	२
(सां)नि निरें नि ध	(ध)म ध म ग	म रे ग म	ग रे सा –
अ बऽ न र	हों ऽ ते री	म थु रा न	ग रि या ऽ।
०	३	×	२

ठाउ काफी

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां

राग काफी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : प, संवादी : सा
स्वर : ग नि कोमल
गायन-समय : मध्य रात्रि
आरोह : सारेग, म, प, धनिसां
अवरोह : सां नि ध, प, मग, रे, सा

सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प	ऽ	ऽ	म	प	ध	नि	सां
०				३				×				२			
नि	ध	प	म	ग	ग	रे	रे	रे	प	म	प	म	ग	रे	सा
०				३				×				२			

अंतरा

म	म	प	ध	नि	नि	सां	ऽ	रें	गं	रें	सां	नि	ध	नि	ऽ
०				३				×				२			
ध	ध	प	प	प	ध	प	म	प	ऽ	ऽ	म	प	ध	नि	सां
०				३				×				२			
नि	ध	प	म	ग	ग	रे	रे	रे	प	म	प	म	ग	रे	सा
०				३				×				२			

राग काफी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

सा नि
प्र भु

			म												
सा	रे	रे	ग	–	म	–	म	प	–	–	ग	प	ध	नि	सां
ते	री	द	या	ऽ	है	ऽ	अ	पा	ऽ	ऽ	तूँ	अ	ग	म	अ
०				३				×				२			
				म											
नि	ध	प	म	ग	ग	रे	रे	रे	नि	ध	नि	प	ध	म	प
गो	ऽ	च	र	अ	वि	क	ल	च	र	अ	च	र	स	क	ल
०				३				×				२			
												म			
म	ग	म	प	म	–	सा	नि	सा	ग	रे	म	ग	–,	रे	नि
ऽ	क	तु	अ	धा	ऽ	पं	ति	त	न	को	उ	द्धा	ऽ,	प्र	भु।
०				३				×				२			

अंतरा

		म	
प – प ध	म प नि सां	रें गं रें सां	रें नि सां सां
दी ऽ न अ	ना ऽ थ प	ति त अ रु	दु र ब ल
०	३	×	२
	म		
नि नि ध प	ग – रे –	रे नि ध नि	प ध म प
मैं ऽ अ प	रा ऽ धी ऽ	श र णा ऽ	ग त हूँ ऽ
०	३	×	२
			म
म ग म प	म – सा नि	सा ग रे म	ग – रे नि
च तु र ति	हा ऽ मों हे	पा ऽ र उ	ता ऽ प्र भु।
०	३	×	२

राग काफी—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

सां	म		
प ध नि –	ध ध धप ग	– ग रेग रेसा	प – प –
म न रे ऽ	सु न पुऽ रा	ऽ न क्या ऽऽ	की ऽ ता ऽ
२	०	३	×
	म		
नि सां निसांरें नि	ध ध धप ग	– ग रेग सारे	– प – प
म न रेऽऽ ऽ	सु न पुऽ रा	ऽ न क्या ऽऽ	की ऽ ता ऽ
२	०	३	×

अंतरा

प	सां	म	
म – प ध	नि नि सां –	सांरें गं रें सां	रें नि सां –
मो ऽ ह ल	ग न की ऽ	गंऽ ऽ ल न	छाँ ऽ ड्यो ऽ
०	३	×	२

सां			रें
नि – सां नि	सां सां नि सां	निसां रेंनि ध प	ध सां नि –
का ऽ म अ	म ल म द	पीऽ ऽऽ ता ऽ	म न रे ऽ।
०	३	×	२

अंतरा २

म म प ध	नि – सां –	निसां रेंगं रें सां	रें नि सां सां
सु त व नि	ता ऽ बं ऽ	धूऽ ऽऽ के ऽ	का ऽ र न
०	३	×	२
सां	सां		सां सां
नि नि सां सां	नि नि सां सां	निसां रेंनि ध प	प ध पध नि
प चि प चि	ज न म बि	तीऽ ऽऽ ता ऽ	म न रेऽ ऽ।
०	३	×	२

ठाठ आसावरी

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां

राग आसावरी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : ध, संवादी : ग
स्वर : ग, ध, नि कोमल तथा आरोह में ग, नि वर्जित
गायन-समय : दिन का दूसरा प्रहर
आरोह : सा, रे, म, प, ध सां
अवरोह : सां, नि, ध, प, मग, रे, सा

स्थायी

रे	म	प	नि	ध	ध	प	प	म	प	ध	प	ग	ग	रे	सा
३				×				२				०			
रे	सा	ध़	प़	म़	प़	ध़	सा	रे	म	प	ध	ग	ग	रे	सा
३				×				२				०			

अंतरा

म	प	ध	ध	सां	ऽ	रें	सां	ध	ध	सां	गं	रें	सां	ध	प
३				×				२				०			
प	गं	रें	सां	रें	सां	ध	प	म	प	ध	प	ग	ग	रे	सा
३				×				२				०			

राग आसावरी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प प

मो रे

(नि)ध	—	प	प	ध	म	प	—	पध	मप	(म)ग	—	(सा)रे	—	सा	—
का	ऽ	न	भ	न	क	वा	ऽ	पऽ	रिऽ	लो	ऽ	री	ऽ	मा	ऽ
×				२				०				३			
म	प	पध	पप	(म)ग	—	(म)ग	—	(म)ग	ग	रे	सा	रे	—	सा	सा
ज	ब	आऽ	ऽऽ	वें	ऽ	गे	ऽ	ह	म	रे	ऽ	ला	ऽ	ल	न
×				२				०				३			
(नि़)सा	—	(नि)ध	ध	प	—	ध	म	पध	मप	(म)ग	—	(सा)रे	म,	प	प
आ	ऽ	प	हि	मो	ऽ	रे	सं	दऽ	रऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ,	मो	रे
×				२				०				३			

अंतरा

				त्रि		त्रि		ध							
म	म	प	—	ध	—	ध	—	सां	—	सां	सां	सां	सां	सां	—
ज	ब	आ	ऽ	वें	ऽ	गे	ऽ	या	ऽ	द	र	व	ज	वा	ऽ
२				०				३				×			
त्रि		त्रि		ध										त्रि	
ध	ध	ध	ध	सां	सां	सां	—	सांरें	गं	रें	सां	रें	सां	ध	प
त	न	म	न	ध	न	नौ	ऽ	छाऽ	ऽ	व	र	क	रि	हूँ	ऽ
२				०				३				×			
म	प														
प	गं	—	रेंसां	रें	—	सां	—	—	म	प	ध	सां	—	—	—
स	दा	ऽ	रँऽ	गी	ऽ	ले	ऽ	ऽ	मं	म	द	शा	ऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			
प						म		सा							
ध	प	ध	म	पध	मप	ग	—	रे	म,	प	प				
र	त	न	भ्र	नऽ	कऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ,	मो	रे				
२				०				३							

राग आसावरी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प				म				म				त्रि			
ध	म	पध	मप	ग	—	रे	सा	रे	म	प	सां	ध	—	प	—
ह	रि	बिऽ	नऽ	ते	ऽ	रा	ऽ	कौ	ऽ	न	स	हा	ऽ	ई	ऽ
२				०				३				×			
प				त्रि								म			
ध	म	प	प	ध	—	प	—	ध	म	पध	मप	ग	—	रें	सा
ह	रि	बि	न	का	ऽ	के	ऽ	मा	ऽ	ऽत	पिऽ	ता	ऽ	सु	त
२				०				३				×			

	नि सां	सां	सां सां नि
रे रे सा –	सां – गं –	रें – सां –	रें रें ध प
व नि ता ऽ	को ऽ का ऽ	हू ऽ को ऽ	भा ऽ ई ऽ ।
२	०	३	×

अंतरा

	नि नि	ध	
स म प प	ध – ध ध	सां – सां सां	सां सां सां –
ध न ध र	नी ऽ अ रु	सं ऽ प ति	न ग री ऽ
०	३	×	२
नि नि	ध	सां	
ध – ध –	सां – सां सां	सांरें गं रें सां	रें नि ध प
ओ ऽ मा ऽ	न्यो ऽ अ प	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ
०	३	×	२
		म	
प ध नि –	ध प पध मप	ग – रे सा	रे – सा –
त न छू ऽ	टे ऽ कऽ छुऽ	सं ऽ ग न	चा ऽ ले ऽ
०	३	×	२
नि सा	सां	सां सां नि	प
सा सा गं –	रें – सां सां	रें रें ध प	ध म पध मप
क हा ता ऽ	ही ऽ ल प	टा ऽ ई ऽ	ह रि बिऽ नऽ ।
०	३	×	२

ठाठ भैरवी

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां

राग भैरवी- त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : म, संवादी : सा
विकृत स्वर : रे, ग, ध, नि कोमल
गायन-समय : प्रातःकाल
आरोह : सा, रे, ग म, प, ध, नि सां
अवरोह : सां, नि, ध, प, मग, रे, सा

स्थायी

सा ध प ध	म प ग म	नि ध ऽ सा	ऽ रे ग म
०	३	×	२
ग रे सा ऽ	ध़ नि़ सा रे	नि़ सा म म	ग ग रे सा
०	३	×	२

अंतरा

नि़ सा ग म	ध म ध नि	सां ऽ सां ऽ	गं गं रें सां
०	३	×	२
नि सां गं मं	पं गं ऽ मं	गं रें सां ऽ	गं गं रें सां
०	३	×	२
सां सां नि नि	ध ध प प	म म ग ग	रे रे सा ऽ।
०	३	×	२

राग भैरवी–दादरा (६ मात्राएँ)

स्थायी

											म
											गो
(ग)रे	ग	रे	सा	रे	नि	सा	सा	—	—	—	सा
विं	ऽ	द	को	ऽ	भ	ज	न	ऽ	ऽ	ऽ	क
×			०			×			०		
रे	म	—	—	प	ध	(म)प	—	—	(म)ग	—,	म
र	ले	ऽ	ऽ	म	न	रं	ऽ	ऽ	ग	ऽ,	गो
×			०			×			०		

अंतरा

(प)ध	—	म	ध	—	नि	सां	—	—	सां	—	—
अं	ऽ	ऽ	त	ऽ	र	या	ऽ	ऽ	मी	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
(सां)नि	नि	—	सां	—	—	(गं)रें	—	सां	(नि)ध	—	प
न	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	रा	ऽ	य	ण	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
सा	—	ध	प	प	—	प	प	—	प	ध	नि
पू	ऽ	ऽ	र	त	ऽ	स	ब	ऽ	के	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
(नि)ध	—	पम	(म)ग	—,	म						
का	ऽ	ऽऽ	म	ऽ,	गो						
×			०								

राग भैरवी– त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

नि़	ग॒		
सा – सारे॒,पम	रे॒ – सारे॒ ,नि॒	सा – – सा	पप धु॒प मग॒ रे॒सा
सो ऽ ऽऽ, चम	ना ऽ ऽऽ ,तू	कौं ऽ ऽ न	घट मेंऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२
	ग॒		
सा – सारे॒ पम	रे॒ – सारे॒ ,नि॒	सा – – सा	पप पधु॒नि॒सां, नि॒धु॒पम ग॒रे॒सा-
सो ऽ ऽऽ, चम	ना ऽ ऽऽ ,तू	कौं ऽ ऽ न	घट मेऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ।
०	३	×	२

अंतरा

		म	
सा सा सा –रे॒	ग॒ – म –	ग॒ ग॒ म –	रे॒ग॒मप धु॒नि॒धु॒प मग॒रे॒सा रे॒नि॒सा-
क हाँ से ऽतू	आ ऽ यो ऽ	क हाँ जा ऽ	वेऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽगोऽ
०	३	×	२
नि़ सा	प	नि॒ म म	
सा – धु॒ –	प प धु॒ पधु॒सां	धु॒ प ग॒ –	पप धु॒प मग॒ रे॒सा
भे ऽ जा ऽ	तु झ को ऽऽऽ	कौं ऽ न ऽ	घट मेंऽ ऽऽ ऽऽ ।
०	३	×	२

अंतरा २

प		सां	नि नि
ध म ध नि	सां – सां –	नि – सां –	सांरेंगंगं –सांरेंरें सां धप
क्या ऽ तू ऽ	ला ऽ यो ऽ	क्या ऽ ले ऽ	जाऽऽऽ ऽऽऽऽ वे गोऽ
०	३	×	२
नि	प	नि	पध
सा ध – पप	प प ध पधसां	ध प (ग) –	प प निनिधप मगरेसा
मा ऽ ऽ लिक	स ब का ऽऽऽ	कौं ऽ न ऽ	घ ट मेंऽऽऽ ऽऽऽऽ।
०	३	×	२

ठाठ तोड़ी

स्वर

सा रे ग मे प ध नि सां

राग तोड़ी—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : ध। संवादी : ग
स्वर : रे, ग, ध कोमल; म तीव्र
गायन-समय : दिन का दूसरा प्रहर
आरोह : सा, रे, ग, मेप, ध, निसां
अवरोह : सांनिधप, मेग, रे, सा

स्थायी

ध	ध	प	प	म॑	म॑	प	ध	म॑	ग	ऽ	रे	ग	म॑	प	ऽ
०				३				×				२			
ग	म	प	ध	नि	ध	प	म॑	ग	म॑	प	म॑	ग	ग	रे	सा
०				३				×				२			
नि़	स	ग	ग	म॑	ग	म॑	ध	नि	ध	रें	नि	ध	नि	ध	प
०				३				×				२			

अंतरा

म॑	ग	म॑	ध	नि	नि	सां	—	ध	नि	सां	गं	रें	सां	नि	ध
०				३				×				२			
गं	गं	रें	सां	रें	नि	ध	ध	म॑	ध	नि	ध	म॑	ग	रे	सा
०				३				×				२			
नि़	सा	ग	ग	म॑	ग	म॑	ध	नि	ध	रें	नि	ध	नि	ध	प
०				३				×				२			

राग तोड़ी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

(सा)नि	सा	ग	म	प	म	प	ध	(ध)म	—	ग	रे	ग	रे	सा	सा
ने	ऽ	क	चा	ऽ	ल	च	लि	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	च	तु	र
०				३				×				२			
म	म	प	ध	(ध)म	म	ग	—	रे	रे	ग	रे	ग	रे	सा	—
प्र	भु	सों	ऽ	ड	रि	ए	ऽ	ग	र	ब	न	क	रिं	ए	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	ग	ग	(ध)म	—	ध	नि	(ध)म	—	ग	रे	ग	रे	सा	—
ना	ऽ	हिं	भ	रो	ऽ	सो	ऽ	या	ऽ	न	र	त	न	को	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

म	म	ग	ग	म	म	ध	ध	नि	—	सां	नि	सां	सां	सां	सां
ह	र	रं	ग	क	हे	उ	प	दे	ऽ	स	ब	च	न	अ	ब
०				३				×				२			
नि	नि	सां	गं	रें	रें	सां	सां	नि	नि	सां	रें	(रें)नि	नि	ध	—
स	म	झ	स	म	झ	प	ग	ज	ग	में	ऽ	ध	रि	ए	ऽ
०				३				×				२			

								प							
म॑	धु	नि	सां	नि	धुनि	धु	प	ग	–	रे	ग	–	रे	सा	सा
म	नु	ष	ज	न	मऽ	न	हिं	बा	ऽ	र	बा	ऽ	र	य	हाँ
०				३				×				२			
सा				धु				धु							
नि़		ग	–	म	–	धु	नि	म	म	ग	रे	ग	रे	सा	सा
कं	र	ना	ऽ	हो	ऽ	सो	ऽ	क	रि	ए	ऽ	ऽ	च	तु	र
०				३				×				२			

राग तोड़ी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प								ग							
म॑	म॑	प	धु़	म॑	ग	रे	–	रे	रे	सा	नि़	सा	रे	ग	–
क	हाँ	न	र	अ	प	नो	ऽ	ज	न	म	ग	मा	ऽ	वे	ऽ
२				०				३				×			
ग				ग				सा				रे			
रे	–	रे	–	रे	रे	सा	सा	नि़	–	सा	रे	नि़	–	धु़	–
मा	ऽ	या	ऽ	म	द	वि	ष	या	ऽ	र	स	रा	ऽ	च्यो	ऽ
२				०				३				×			
				प				धु	धु						
सा	रे	ग	ग	म॑	म॑	धु	धु	नि	नि	धु	म॑	ग	–	रे	सा
रा	ऽ	म	श	र	ण	न	हिं	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ।
२				०				३				×			

अंतरा

प	प	सां	सां
म म ग —	म — ध ध	नि नि सां —	नि सां सां —
प ह सं ऽ	सा ऽ र स	क ल है ऽ	सु प नो ऽ
२	०	३	×
सां		सां	रें
नि — सां गं	रें — सां —	नि — सां रें	नि — ध —
दे ऽ ख क	हा ऽ लो ऽ	भा ऽ ऽ ऽ	वे ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
ध		म	ग
म ध नि सां	निध नि ध प	ग ग रे रे	रे — सा —
जो ऽ उ प	जेऽ ऽ सो ऽ	स क ल बि	ना ऽ शे ऽ
२	०	३	×
	ध	सां सां	
सा रे ग ग	म ध नि सां	रें रें नि ध	म ग रे सा
र ह न न	को ऽ ऊ ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ वे ऽ।
२	०	३	×

ठाठ तथा ठाठ रागों का तुलनात्मक चार्ट

ठाठ	राग
ठाठ बिलावल	**राग बिलावल**
सा रे ग म प ध नि सां	सा रे ग म प ध नि सां
ठाठ कल्याण	**राग कल्याण**
सा रे ग मं प ध नि सां	सा रे ग मं प ध नि सां
ठाठ खमाज	**राग खमाज**
सा रे ग म प ध नि सां	सा रे ग म प ध नि सां
ठाठ भैरव	**राग भैरव**
सा रे ग म प ध नि सां	सा रे ग म प ध नि सां
ठाठ पूर्वी	**राग पूर्वी**
सा रे ग मं प ध नि सां	सा रे ग मं प ध नि सां
ठाठ मारवा	**राग मारवा**
सा रे ग मं प ध नि सां	सा रे ग मं प ध नि सां
ठाठ काफ़ी	**राग काफ़ी**
सा रे ग म प ध नि सां	सा रे ग म प ध नि सां
ठाठ आसावरी	**राग आसावरी**
सा रे ग म प ध नि सां	सा रे ग म प ध नि सां
ठाठ भैरवी	**राग भैरवी**
सा रे ग म प ध नि सां	सा रे ग म प ध नि सां
ठाठ तोड़ी	**राग तोड़ी**
सा रे ग मं प ध नि सां	सा रे ग मं प ध नि सां

पाठ्यक्रम के अनुसार

संगीत सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द कोश

[लेखक : डॉ० लक्ष्मीनारायण गर्ग]

अंतरा : गीत का दूसरा अन्तिम भाग; अनुपल्लवी।

अंश स्वर : मूर्च्छना का प्रथम स्वर; गीत का केन्द्रीय मुख्य स्वर।

अचल : स्थिर; अच्युत।

अचल स्वर : जो स्वर अपने स्थान से स्थूल रूप में ऊँचे या नीचे नहीं होते।

अचल ठाठ : जिस वाद्य में परदे खिसकाए न जा सकें बल्कि वे निश्चित स्थान पर कायम रहें, उसे अचल ठाठ वाला वाद्य कहते हैं।

अभ्यास : पुनरावृत्ति; अनुशीलन; दोहराने की क्रिया।

अनाहत नाद : उपासना द्वारा अनुभव में आने वाला अतिसूक्ष्म स्वयंभू नाद।

अनुवाद : दो स्वरों का अनुकूल मिलन।

अनुवादी स्वर : वादी और संवादी के अतिरिक्त राग के अन्य स्वर।

अपन्यास : गीत के पूर्वार्द्ध या स्थायी का अन्तिम स्वर।

अमीर ख़ुसरो : अमीर मुहम्मद सैफ़ुद्दीन का पुत्र, जन्म १२५३ ई०, स्थान एटा ज़िले का पटियाली कस्बा, उच्चकोटि का कवि, कलाकार, संगीतज्ञ, ७२ वर्ष की आयु में सन् १३२५ के लगभग दिल्ली में मृत्यु।

अलंकार : सौन्दर्य उत्पन्न करने वाला विशिष्ट स्वर या वर्ण-समुदाय।

अवनद्ध : चमड़े से मढ़ा हुआ।

अवरोह : स्वरों का मन्द्र-सप्तक; नीचे की ओर उतार; अवरोही; अवरोहण।

अष्टक : षड्ज से षड्ज तक क्रमानुसार आठ स्वरों का समुदाय; 'ऑक्टेव'।

आन्दोलन : कम्पन।

आड़ या आड़ी लय : मध्य लय से डेढ़ गुनी (1½) लय।

आभोग : ध्रुवपद-धमार गान का अंतिम भाग; पल्लवी।

आरोह : स्वरों का तार-सप्तक (ऊँचे) की ओर चढ़ाव; आरोही; आरोहण।

आलाप : राग-स्वरों का विस्तार; आलापना।

आवर्त : निश्चित अवधि का चक्र।

आवृत्ति : किसी ताल या बंदिश का वह भाग जिसको दुहराया जाए।

आहत नाद : घर्षण से उत्पन्न होकर सुनाई देने वाला व्यक्त नाद।

इसराज : गज़ से बजने वाला तत-वाद्य; दिलरुबा।

उत्तरांग : राग का दूसरा अन्तिम भाग।

उत्तर भारतीय संगीत : उत्तर भारत में प्रचलित संगीत।

उड़ीसी या ओडिसी नृत्य : उड़ीसा प्रदेश का शास्त्रीय नृत्य।

ऋषभ : सप्तक का दूसरा स्वर; 'रे'।

एकतारा : एक तार वाला ततवाद्य; एकतन्त्री।

एकल या एकाकी वादन : एक ही कलाकार का प्रदर्शन; सोलो।

ओ३म् या ओंकार : प्रणव; सृष्टि का आदि नाद; नादब्रह्म।

औडव : पाँच स्वरों वाले राग की जाति।

कम्पन : आन्दोलन; थरथराहट।

कजरी : वर्षा ऋतु से सम्बन्धित पूर्वी उत्तर प्रदेश की गीत-शैली।

कथक नृत्य : उत्तर भारत का परम्परागत शास्त्रीय नृत्य; गाथा गायक; एक नर्तक-सम्प्रदाय।

कथकलि नृत्य : दक्षिण भारत के केरल प्रदेश का शास्त्रीय नृत्य।

कण स्वर : मूल स्वरों को स्पर्श करने वाला स्वर; खटका।

कर्नाटिक संगीत : दक्षिण भारतीय संगीत।

कला : शिल्प; कारीगरी; विशेषता युक्त क्रिया; करतब।

कव्वाली : भक्तिपरक मुस्लिम गान-शैली।

कहरवा : चार या आठ मात्राओं की ताल, जिसका अधिकांश प्रयोग लोक संगीत या सुगम संगीत में होता है।

कुआड़ या कुआड़ी लय : मध्य लय से सवाई (1¼) लय।

कुचिपुड़ी : दक्षिण भारत में आन्ध्र प्रदेश का शास्त्रीय नृत्य।

कोमल : शुद्ध स्वर से पहले वाला स्वर; उतरा स्वर।

कृति : किसी राग में सम्पूर्ण काव्य-रचना।

कृष्ण : विष्णु के अवतार नटवर नागर भगवान् श्रीकृष्ण।

खण्ड : विभाग; हिस्सा।

खटका : द्रुत गति से मूल स्वर को स्पर्श करते हुए स्वर लगाना।

ख़याल : गीत-गायन का एक प्रकार या गायन-शैली।

ख़ाली : ताल की वह विषम मात्रा या स्थान जिसे ताल का स्वरूप निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

खोल : मृदंग या पखावज की तरह का एक अवनद्ध वाद्य।

गत : वाद्य संगीत की रचना।

गमक : ज़ोरदार ध्वनि के साथ स्वर पर आन्दोलन करना।

ग़ज़ल : उर्दू या फ़ारसी में प्रेम-विषयक गीत या काव्य।

गांधार : सप्तक का तीसरा स्वर; 'गा'।

ग्रह स्वर : संगीत - रचना (राग) का प्रारम्भिक स्वर; आधार स्वर।

ग्राम : निश्चित व्यवस्था के अनुसार स्थापित सात विशिष्ट स्वरों का सप्तक; षड्जग्राम, गांधारग्राम और मध्यमग्राम ये तीन ग्राम माने गए हैं।

गीत : गान; छन्दोबद्ध काव्य।

गोपाल नायक : अमीर ख़ुसरो का समकालीन; १६२४ ई० के राजा रामदेव राव यादव के आश्रित कुशल दरबारी गायक।

घनवाद्य : टंकोर या आघात से बजने वाले वाद्य।

घराना : परम्परा।

घसीट : दो स्वरों के बीच में धनुषाकार द्रुत स्वर-लगाव; मीड़ का एक प्रकार।

चक्करदार : ताल या तान की तिहाई-युक्त आवृत्तियाँ।

चतुरंग : ख़याल का ऐसा अंग जिसमें गीत, सरगम, ताल और तराना के बोलों की प्रधानता हो।

चल ठाठ : जिस वाद्य में परदों को खिसका कर स्वरों को ऊँचा-नीचा किया जाता है, उसे चल ठाठ वाला वाद्य कहते हैं।

चल स्वर : वे स्वर जो अपने स्थान से ऊँचे या नीचे होते हैं अर्थात् जिन्हें कोमल व तीव्र बनाया जा सकता हो।

चिकारा : सितार में चिकारी के तार से पहले वाला तार।

चिकारी : तारवाद्यों में अन्तिम तार-सप्तकीय तार।

चैती : विरह वर्णन से युक्त भोजपुरी भाषा का गीत।

छोटा ख़याल : मध्य या द्रुत लय में गाया जाने वाला ख़याल।

ज़मज़मा : वाद्य में स्वर को आंदोलित करने की क्रिया।

जवारी : तारवाद्यों की घुड़च या ब्रिज की सतह पर स्वर को गुंजन प्रदान करने वाला स्थान-विशेष; जीवा; सूत।

जाति : ध्रुपद गान से पूर्व का एक प्राचीन गान-प्रकार; दस लक्षणों से युक्त विशिष्ट स्वर-सन्निवेश; नाद का गुण-धर्म।

जातिगान : ध्रुपद व प्रबन्धगान से पूर्व का एक प्राचीन गान-प्रकार।

जुगलबन्दी : दो कलाकारों द्वारा सम्मिलित रूप से प्रस्तुत संगीत प्रदर्शन।

जोड़ : वीणा या सितार के मोटे तार (जो एक ही स्वर में मिलाए जाते हैं) पर आलापचारी दिखाना जोड़ का काम कहा जाता है।

जोड़े के तार : तारवाद्यों में बीच के दो एकस्वरीय तार जो प्रायः मन्द्र सप्तक के आधार स्वर (षड्ज) में मिले होते हैं।

ज्ञान : जानकारी; विद्या।

झाँझ : धातु की प्लेट से बना तश्तरीनुमा घन वाद्य।

झाला : तन्त्रीवाद्य पर द्रुतलय में राग विस्तार के लिए किया जाने वाला जोड़ का काम; धारा।

टप्पा : शास्त्रीय गायन की एक विधा।

टिम्बर : नाद की जाति या गुण।

टीप : तारसप्तक का षड्ज उच्चतर प्रधान स्वर।

टुकड़ा : तबले में बजने वाला छोटा बोलसमूह, जिसे गत या परन न कहा जा सके।

टेक : दोहराये जाने वाली काव्य-पंक्ति।

ठाठ या थाट : क्रमानुसार सात स्वरों का ढाँचा या समूह।

ठुमरी : शृंगाररस-प्रधान गीत-शैली।

ठेका : ताल के स्वरूप को स्पष्ट करने वाला बोल-समूह।

डाट : ऊँचे स्वर से नीचे स्वर तक बीच की श्रुति की ध्वनि के साथ मीड़ सहित जाना।

डाँड : तारवाद्यों का वह भाग जहाँ वादन क्रिया की जाती है।

ढोलक : दोनों हाथों से बजाया जाने वाला एक अवनद्ध वाद्य।

तबला : बहु-प्रचलित तालवाद्य।

तराना : स्तोभाक्षर या शुष्काक्षर-युक्त गीत; निरर्थक शब्द-समूह से युक्त शास्त्रीय गान-शैली; निर्गीत; बहिर्गीत।

ततवाद्य : तारों से युक्त वाद्ययंत्र।

तान : राग को विस्तार देने वाला स्वर-समूह।

तानपूरा : आधार स्वरों की गूँज में निरंतरता बनाए रखने वाला ततवाद्य; तम्बूरा।

तानसेन : मध्य प्रदेश के बेहट गाँव के मुकुंदराम पांडे के पुत्र तथा स्वामी हरिदास के शिष्य, ऐतिहासिक संगीतकार, जन्म सन् १५०६-मृत्यु १५८५ ई०।

तार सप्तक : उच्च स्वरों वाला सप्तक।

ताल : समय का एक निश्चित विभाजित स्वरूप।

तालमाला : अनेक तालों से युक्त संगीत-रचना।

ताली : आघात; भरी; ताल में आघात या पात का स्थान।

तिरवट या त्रिवट : पखावज-प्रधान बोलों से युक्त तराने की भाँति गाई जाने वाली एक शास्त्रीय गीत-शैली।

तिहाई : किसी भी स्वर-सन्निवेश या ताल सम्बन्धी बोलों को एक ही स्वरूप में तीन बार प्रस्तुत करने की क्रिया।

तीव्र या शुद्ध : कोमल स्वर से ऊँचा निश्चित स्वर।

तुम्बा : तुम्बा फल से निर्मित ततवाद्यों का निचला भाग या पेट; मेरु-स्थापक।

तैयारी : द्रुत लय में प्रस्तुतीकरण।

तोड़ा : सम को अभिव्यक्त करने वाला बोल समूह; बड़ा टुकड़ा।

दुगुन : किसी रचना या ताल की दोगुनी लय।

द्रुत लय : जलद या तेज़ गति।

देशी संगीत : वर्तमान कालीन सामाजिक या शास्त्रीय संगीत।

दोहा : दो पंक्तियों वाली छन्दोबद्ध कविता।

धमार : धमार ताल में गाया जाने वाला प्रबन्ध या गीत।

धैवत : सप्तक का छठा स्वर; 'ध'।

ध्रुपद-धमार : शास्त्रीय गायन की शैलियाँ।

ध्वनि : नाद; आवाज़।

नटराज : शिव का नर्तक स्वरूप।

नटवर : भगवान् कृष्ण।

नाटक : रूपक; अभिनय से युक्त दृश्य-कथा।

नाट्य : अभिनय द्वारा लोक की अनुकृति।

नाद : ध्वनि; आवाज़।

नारद : वेदकालीन संगीत-निपुण एक ऋषि; 'नारदीय-संहिता' का लेखक।

निषाद : सप्तक का सातवाँ स्वर; 'नि'।

नृत्त : ताल और लय के साथ चमत्कारिक अंग-संचालन।

नृत्य : भावाभिनय के साथ अंग-संचालन।

नौटंकी : उत्तरभारतीय लोकनाट्य; स्वाँग।

न्यास : गीत का विश्रांतिदायक स्वर।

पंचम : सप्तक का पाँचवाँ स्वर; 'प'।

पकड़ : राग वाचक स्वर समूह।

पखावज : दोनों हाथों से बजने वाला एक अवनद्ध पक्षवाद्य; मृदंग।

पद : गीत का चरण या भाग; भक्तिपूर्ण गीत।

परदा : सारिका; ततवाद्यों को बजाने के निश्चित स्वर स्थानों पर प्रयुक्त धातु के टुकड़े।

पद्धति : प्रकार; ढंग; शैली; परंपरा।

परन : खुले हुए बोलों से निर्मित तबला या पखावज आदि पर बजने वाली रचना।

पिच : स्वर की स्थिरता का निश्चित स्थान; नाद का ऊँचा-नीचापन।

पेशकार : ताल को प्रदर्शित करने वाले बोल; ठेके का विस्तार।

पुड़ी : ताल वाद्यों के मुख को ढकने वाला चमड़ा।

पूर्वांग : राग का प्रारम्भिक आधा भाग।

प्रहर : दिन या रात्रि का कोई भी चौथा भाग।

बड़ा ख़याल : विलंबित लय का ख़याल; आलाप प्रधान शास्त्रीय गान प्रकार।

बन्ना : विवाह के समय गाए जाने वाले उत्तर प्रदेशीय लोकगीत का एक प्रकार।

बाँसुरी : सुषिरवाद्य; मुरली; वेणु; वंशी; वंश।

बाज : घराने का तरीक़ा या ढंग; वाद्यों की वादन शैली का एक प्रकार; किसी ताल का संपूर्ण प्रस्तुतीकरण।

बानी (वाणी) : परम्परागत शैली; घराना विशेष।

बिआड़ या बिआड़ी लय : मध्य-लय से पौने दो गुनी (1¾) लय।

बीनकार : वीणावादक।

बेताल : ताल रहित; तालच्युत।

बेसुरा : कर्कश; विस्वर; स्वरहीन।

बोल : गीत; वाद्य या नृत्य की भाषा; शब्द; पाटाक्षर।

बोल तान : गीत के शब्दों से सज्जित तान।

ब्रह्मा : तीन आदि देवों में से प्रथम; पंचम गांधर्व वेद या नाट्यवेद के सृष्टिकर्ता।

भजन : भक्तिभाव-पूर्ण गीत।

भरत : 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता (ईसापूर्व के ऋषि); नट।

भाव : हृदय में स्थित स्थायी भाव जिससे स्थायी रस उत्पन्न होता है।

मँजीरा : धातु के प्यालीनुमा टुकड़ों से बना घनवाद्य।

मंद्र सप्तक : नीचे स्वरों वाला सप्तक।

मसीतख़ानी गत : विलम्बित लय में एक परम्परागत सितारगत के बोलों का निश्चित ढाँचा।

मणिपुरी नृत्य : असम प्रदेश का शास्त्रीय नृत्य।

मध्यम : सप्तक का चौथा या मध्य स्वर; 'मा'।

मध्य लय : धीमी और तेज़ लय के बीच की लय।

मध्य सप्तक : बीच के स्वरों का सप्तक।

मार्गी संगीत : वेदकालीन प्राचीन शास्त्रीय संगीत।

मिज़राब : ततवाद्यों को बजाने के लिए तार आदि से बना हुआ कोण; अंकुश; नखी।

मात्रा : समय के माप का परिमाण।

मिश्र राग : किसी एक या अधिक रागों के मिश्रण से बना हुआ राग।

मीड़ : एक स्वर से दूसरे स्वर तक धनुषाकृति की तरह सुरीले ढंग से बिना रुके जाना।

मुर्की : वक्र स्वरों का द्रुत लय में लगाव; गिटकरी।

मुखड़ा : किसी भी रचना का प्रारम्भिक भाग।

मुद्रा : भाव को अभिव्यक्त करने वाली आंगिक चेष्टा; आकृति विशेष।

मूर्च्छना : सप्तक में क्रमानुसार ५, ६, या ७ स्वरों का प्रयोग; आरोह एवं अवरोहात्मक क्रमयुक्त ५, ६ या ७ स्वरों का प्रयोग।

मैग्नीट्यूड : नाद का छोटा-बड़ापन जो नापा जा सके।

मोहरा : ताल का ठेका या सम पकड़ने के लिए किसी छोटे बोल-समूह को तिहाई या बिना तिहाई के बजाना; मुखड़ा।

मोहिनी अट्टम् : दक्षिण के केरल प्रदेश का शास्त्रीय नृत्य।

मृदंग : पखावज; लकड़ी या मिट्टी से बना एक अवनद्ध पक्षवाद्य।

रज़ाख़ानी गत : द्रुत लय में एक परम्परागत सितारगत के बोलों का निश्चित ढाँचा।

रसिया : उत्तर भारतीय लोकगीत-शैली।

राग : शास्त्रोक्त लक्षणों से युक्त रंजक स्वर-समूह।

राग मालिका : विभिन्न रागों के सहयोग से बनी राग-रचना।

रासलीला : उत्तर भारतीय लोकनाट्य।

रेला : तबला या मृदंग में मध्यलय में द्रुत लय वाले अक्षर या बोलों को लगातार बजाना।

लग्गी : तबला-बोलों में द्रुत लय में बजाया जाने वाला अक्षर-समूह जो संगीत में रस उत्पन्न करने में सहायक होता है।

लड़ या लड़ी : ताल सम्बन्धी किसी टुकड़े को अनवरत रूप से प्रदर्शित करने की क्रिया।

लक्षण गीत : राग के लक्षणों को प्रस्तुत करने वाला गीत।

लय : बराबर के आघात; समय की एक सी चाल।

लहरा : ताल के ठेके के अनुसार निश्चित मात्राओं की स्वर-रचना।

लाग : राग-वादन में नीचे से ऊँचे स्वर तक बीच की श्रुति की ध्वनि के साथ मीड़ सहित जाना।

लोक संगीत : सामाजिक संगीत; परम्परागत प्रादेशिक संगीत।

वक्रतान : टेढ़ी गति से प्रस्तुत की जाने वाली तान।

वक्रस्वर : टेढ़ी गति से प्रयुक्त होने वाले स्वर।

वर्जित : निषिद्ध (स्वर)।

वर्ण : गान की प्रत्यक्ष क्रिया।

वाग्गेयकार : क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक संगीत तथा साहित्य का ज्ञाता।

वादी : राग का प्रधान स्वर।

वाद्ययंत्र : संगीत में बजाए जाने वाले यंत्र या साज़।

वॉयलिन : गज़ से बजने वाला ततवाद्य; बेला।

विकृत स्वर : शुद्ध स्वरों के परिवर्तित स्वरूप; च्युत स्वर।

विद्वान् : विद्यावान्; संगीत शास्त्र का ज्ञाता।

विभाग : खण्ड; भाग; हिस्सा।

विन्यास स्वर : वह स्वर जिस पर राग या पद का कोई भाग समाप्त हो।

विलम्बित लय : धीमी या मन्द गति।

विवाद : स्वरों का अनिष्ट सम्बन्ध।

विवादी : राग-स्वरूप को नष्ट करने वाला प्रतिकूल स्वर; राग का शत्रु।

विष्णुनारायण भातखण्डे : प्रसिद्ध संगीतकार व शास्त्रज्ञ (१० अगस्त, १८६०-१९३६ ई०), भातखंडे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय के अधिष्ठाता, उपनाम 'चतुर पंडित'।

विस्तार : फैलाव; विशालता।

वीणा : दो तुम्बों वाला ततवाद्य।

शहनाई : वेणु के प्रकार का सुषिर वाद्य।

शार्ङ्गदेव : तेरहवीं शताब्दी के महान् संगीताचार्य एवं 'संगीतरत्नाकर' ग्रन्थ के रचयिता।

शुद्ध स्वर : निश्चित श्रुतियों पर स्थापित ऐसे स्वर जो कोमल स्वरों से कुछ ऊँचे होते हैं।

श्लोक : छन्दोबद्ध संस्कृत काव्य।

श्रुति : मनुष्य के कानों द्वारा सुनी जा सकने वाली सूक्ष्म ध्वनि; स्वर का प्रारम्भिक बिन्दु; वेद।

षड्ज : सप्तक का प्रथम स्वर; 'सा'; अन्य छह स्वरों का जनक; गीत का आधार स्वर।

षाडव : छह स्वरों वाले राग की जाति।

संकीर्ण : एक से अधिक रागों के मेल से बने राग की जाति।

संगीत : गायन, वादन या नृत्य से सम्बन्धित कला।

संपूर्ण : सात स्वरों वाले राग की जाति।

संचारी : ध्रुपद-गायन में आलाप का तीसरा भाग।

संधिप्रकाश राग : वे राग जो रात्रि और दिन के मिलने वाले समय में गाए जाते हैं।

संवादी : वादी स्वर के साथ संवाद करने वाला मुख्य स्वर।

सन्यास : गीत के प्रथम खंड की समाप्ति वाला स्वर।

सप्तक : उच्च से उच्चतर क्रमानुसार स्थापित सात स्वरों का समूह; षड्ज से निषाद तक सप्त स्वरों का स्थान।

सम : किसी भी ताल की पहली मात्रा जहाँ पूरी लय का वज़न आता है।

सरगम : स्वरनामों में निबद्ध रचना; शब्द रहित स्वरावली।

सरस्वती : संगीत की अधिष्ठात्री देवी; वीणापाणि; वाग्देवी; शारदा; हंसवाहिनी।

सरोद : रबाब परिवार का एक परिष्कृत ततवाद्य।

सारंगी : गज़ से बजने वाला ततवाद्य; शार्ङ्गी वीणा।

सारणा : श्रुति और स्वरों की स्थापना करने की प्रणाली।

सारिका : तार-वाद्यों के परदे।

सितार : वीणा परिवार का सप्ततंत्री ततवाद्य; सहतार; सितारी; सरस्वती-वीणा।

सुषिर वाद्य : फूँक या हवा से बजने वाले वाद्य।

सूत : मीड़ का सूक्ष्म प्रकार।

सोहर : शिशु-जन्म के समय गाए जाने वाले उत्तर प्रदेशीय लोकगीत का एक प्रकार।

स्थायी : गीत का प्रथम पद या चरण।

स्वयंभू नाद : स्वरों के इष्ट या प्राकृतिक सम्बन्ध से अपने आप उत्पन्न होने वाला नाद; मूल नाद से स्वयं जन्म लेने वाला सहायक या संवादी नाद; तम्बूरा-गान्धार।

स्वर-विस्तार : स्वरों का प्रस्तार; स्वर-विकास की प्रक्रिया।

स्वर : कर्णप्रिय नाद; रंजक ध्वनि; श्रुति का स्थिर रूप।

स्वरमण्डल : अनेक तारों से युक्त ततवाद्य; शततन्त्री वीणा का लघुस्वरूप।

स्वरमालिका : केवल स्वरों से समन्वित संगीत-रचना।

स्वरलिपि : संगीत को लिखित रूप में प्रस्तुत करने वाली विधि; स्वरांकन-प्रणाली।

स्वरसागर : स्वर और शब्द की एकरूपता स्थापित करने वाली संगीत-रचना।

स्वामी हरिदास : वृन्दावन निवासी संत संगीतकार (जन्म सं० १५३७); तानसेन के गुरु, मृत्यु सं० १६६४ के लगभग।

हारमोनियम : धौंकनी-चालन से बजने वाला मुक्त पत्ती युक्त सुषिरवाद्य।

Hindustani Sangeet Paddhati
KRAMIK PUSTAK MALIKA
PART-1



SANGEET KARYALAYA
HATHRAS 204101
INDIA